हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 22 फरवरी 2026

तापमान
अधिकतम 28 .0 डिग्री
न्यूनतम 10 .5 डिग्री

12 नई अनाजमंडी में श्री श्याम खाटू वाले का जागरण आज, पांडाल सजकर हुआ तैयार

12 अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक चुनौतियों का सामना करें हिंदू समाज

खबर संक्षेप

मारपीट मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

धारूहेड़ा। पुलिस ने बेरली में मारपीट करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मारपीट में घायल हुए पीड़ित के बयान पर कई लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था। पीड़ित ने उसके साथ जमकर मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए थे। गत 5 फरवरी को दर्ज किए गए मामले में पुलिस ने गुरुग्राम के पंचगांव निवासी ब्रह्मप्रकाश और योगेश को गिरफ्तार कर लिया। मामले की तफ्तीश में शामिल करने के बाद आरोपियों को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

कुरुक्षेत्र में कल से 27 तक होगा सांग महोत्सव

रेवाड़ी। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि धर्मनगरी कुरुक्षेत्र में 23 से 27 फरवरी तक पांच दिवसीय सांग महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रदेशभर के कलाकार सांगों की प्रस्तुति देंगे। डीसी ने बताया कि सूचना, लोक संपर्क एवं भाषा विभाग हरियाणा की ओर से श्री धनपत सिंह सांग स्मृति पुरस्कार के उपलक्ष्य में सांग महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से कलाकृति भवन, हरियाणा कला परिषद नजदीक ब्रह्मसरोवर कुरुक्षेत्र में आयोजित किया जाएगा। पांच दिवसीय सांस्कृतिक आयोजन में कुल 24 सांग प्रस्तुत किए जाएंगे, जिनमें ऐतिहासिक, पौराणिक एवं लोककथाओं पर आधारित कथानक शामिल हैं। विभाग के उप निदेशक एवं डीआईपीआरओ अमित पंवार ने बताया कि सांग महोत्सव के अंतर्गत 23 को वीर विक्रमजीत, हीर-रांझा, राजा नल दमयंती और पिंगला भरथरी जैसे सांग मंचित होंगे।

नगर परिषद की ओर से लंबे समय से ट्रैफिक लाइटों को चालू करने में बरती जा रही सुस्ती

शहर के चौराहों पर सफेद हाथी बनी ट्रैफिक लाइटें लाखों खर्च करने पर भी एक दशक से बंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शहर में दशक से ट्रैफिक लाइटें चालू नहीं हो पा रही है। नगर परिषद ट्रैफिक लाइटों पर मेंटेनेंस व नई लाइटें लगाने के नाम पर लाखों रुपये बर्बाद कर चुकी है। वर्तमान में शहर के चौराहों पर लगी ट्रैफिक लाइटें सफेद हाथी बनी हुई है। दिन-प्रतिदिन बढ़ती वाहनों की संख्या को देखते हुए यातायात व्यवस्थित करने के लिए ट्रैफिक लाइटों को संचालन बेहद जरूरी है, लेकिन प्रशासन की ओर से इस ओर कोई ध्यान न देकर ढील बरती जा रही है। नगर परिषद की ओर से लंबे समय से ट्रैफिक लाइटों को चालू करने में सुस्ती बरती जा रही है।

फिलहाल शहर के चौराहों पर लगी ट्रैफिक लाइटें कहीं टूटकर लटकी हुई है तो कहीं गलत दिशा में घूमी हुई है। शहर के प्रमुख चौराहों पर लगी सभी ट्रैफिक लाइटें इस वक्त बंद पड़ी हुई है, इन लाइटों में ने तो टाइमिंग चल रही है और नहीं ही लाल, हरी व पीली बत्ती जल रही है।

रेवाड़ी। अग्रसेन चौक पर बंद पड़ी ट्रैफिक लाइटें। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। अंबेडकर चौक पर बंद पड़ी ट्रैफिक लाइटें। फोटो : हरिभूमि

2024 में ठेका देने के बाद से बंद लाइटें

नगर परिषद की ओर से वर्ष 2024 के मई माह में नई ट्रैफिक लाइटें लगाने व खराब लाइटों को ठीक कराने के लिए एजेंसी को 24 लाख का ठेका दिया गया था, लेकिन कार्य पूरा नहीं हो पाया, न तो सभी जगह ट्रैफिक लाइटें लगाई गई है और न ही चालू हो पाई। इसके बाद से ट्रैफिक लाइटें बंद पड़ी हुई है। शहर के 7 चौराहों पर लाखों रुपये की ट्रैफिक लाइटें लगाई गई थी। शहर के अग्रसेन चौक, बावल चौक, नाईवाली चौक, झज्जर चौक, अंबेडकर चौक, धारूहेड़ा चुंगी व राव अभय सिंह चौक पर ट्रैफिक लाइटें शुरू की जानी थी। नगर परिषद की ओर से इन लाइटों की मरम्मत पर कई बार लाखों रुपये की राशि खर्च की जा चुकी है, लेकिन जमीनी स्तर पर कोई कार्य नजर नहीं आ रहा है। शहर के सभी चौराहों पर ट्रैफिक लाइटों के सुचारू रूप से चलने ट्रैफिक कंट्रोल करने में काफी मदद मिलेगी। ट्रैफिक लाइटों से शहर की यातायात व्यवस्था में भी काफी हद तक सुधार होगा।

दो विभागों में नहीं बैठ रहा तालमेल

नगर परिषद की ओर से बार-बार ट्रैफिक लाइटों की मेंटेनेंस का लाखों का ठेका दिया जाता है। उसके बाद ट्रैफिक लाइटों का कार्य तो शुरू हो जाता है, लेकिन देखरेख के अभाव में कार्य बीच में ही बंद हो जाता है और ट्रैफिक लाइटें चालू नहीं हो पाती है। शहर में बढ़ते ट्रैफिक को व्यवस्थित करने के लिए इस समय ट्रैफिक लाइटें बेहद जरूरी है, लेकिन नगर परिषद व पुलिस विभाग के बीच तालमेल की कमी के कारण व्यवस्था नहीं बन पा रही है। सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में नगर परिषद के अधिकारियों की ओर ट्रैफिक लाइटों को जल्द शुरू करने का आश्वासन दिया जाता है, लेकिन धरातल पर कोई कार्रवाई नजर नहीं आती है।

दो मकानों के ताले तोड़कर नकदी व जेवरात चोरी

बावल। श्याम कॉलोनी में चोर दो मकानों के ताले तोड़कर लाखों रुपये नकद और जेवरात चोरी कर ले गए। पुलिस ने मौका मुआयना करने के बाद चोरी का केस दर्ज कर लिया। आसपास के सीसीटीवी कैमरों की मदद से चोरों का पता लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं। मूल रूप से यूपी के गोपालपुर का रहने वाला कर्णसिंह एक कंपनी में कार्यरत है। वह श्याम कॉलोनी में किराए के मकान में रह रहा है। कर्णसिंह परिवार सहित नारनौल में दोस्त की बहन की शादी में शामिल होने के लिए गया था।द्ध वापस लौटने पर उसे मकान के ताले टूटे हुए मिले। घर का सारा सामान बिखरा हुआ था। चोर उसके मकान से 3 लाख रुपये और जेवरात चोरी कर ले गए। आसपास पूछताछ करने पर पता चला कि चोरों ने पड़ोस में रहने वाले गुड्डू के बंद मकान में भी चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। वह भी यूपी का रहने वाला है और अपने घर गया हुआ है। उसे भी मकान में चोरी के बारे में सूचना दी गई है। पुलिस ने कर्णसिंह की सूचना पर घटनास्थल का मौका मुआयना करते हुए चोरी का केस दर्ज कर लिया।

रेवाड़ी। चोरी के बाद पुलिस को जानकारी देती महिला। फोटो : हरिभूमि

मोटर चोरी के मामले में एक और आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

लिसान में चोर एक खेत में लगे सोलर पंप सिस्टम की मोटर चोरी करने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसे कोर्ट में पेश करने के बाद रिमांड पर लिया गया है। एक आरोपी को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस शिकायत में लिसाना निवासी सरजीत ने बताया कि उसका खेत नहर के पास है। उसने अपने खेत में फसल सिंचाई के लिए सोलर पंप सेट लगवाया हुआ है। गत 6 फरवरी को उसकी सोलर पंप सिस्टम की मोटर चोरी हो गई। मोटर तीन हॉर्स पावर की है। उसने अपने स्तर पर मोटर की तलाश करने का प्रयास किया, सफलता नहीं मिली। उसकी शिकायत पर पुलिस ने घटनास्थल का मौका मुआयना किया। चोरी का केस दर्ज कर लिया। पुलिस पुलिस ने मोटर चोरी के आरोपी सुमित को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। उससे पूछताछ के बाद चोरी की मोटर खरीदने के आरोप में पुलिस ने यूपी के मंदोरा निवासी मोनिश को चोरी के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया गया है।

!! महायोगी गुरुगोरक्षनाथाय नमः!! !! श्री बाबा मस्तनाथो विजयतेतराम!!

गोरक्ष स्वरुप सिद्ध शिरोमणि
श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज

तपस्वी रणपतनाथ योगी जी

श्री बाबा मस्तनाथ मठ

तपस्वी मानधातानाथ योगी जी

BABA MASTNATH UNIVERSITY ROHTAK
विधेयम् जन सेवनम्
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

सादर आमंत्रण

18वीं सदी से चली आ रही परम्परानुसार
सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी की पुण्यस्मृति में लगने वाला

श्रीयुत महंत
श्रेयोनाथ जी महाराज
पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा सरकार

सालाना मेला व भण्डारा

ब्रह्मलीन महंत
चाँदनाथ जी महाराज
पूर्व सांसद, अलवर

दिनांक : 23, 24 व 25 फरवरी, 2026

तदनुसार फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष : सप्तमी, अष्टमी, नवमी (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को मनाया जा रहा है।

इस बहुआयामी आध्यात्मिक मेले में आप सभी सहपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

अतः सभी महानुभाव, साधु-संत, योगी-संन्यासी, माता बहनें, बच्चे-बुजुर्ग
एवं श्रद्धालु, परिजन-पूरजन-स्वजन के साथ पहुँचकर मेले का आनन्द उठाएँ तथा बाबा जी की दिव्य कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करें।

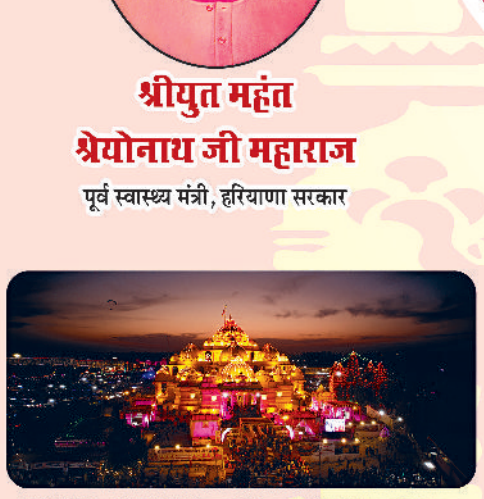

मेले के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे।

सर्कल कबड्डी
24 फरवरी, 2026

विशाल इनामी कुश्ती दंगल
25 फरवरी, 2026

महंत बालकनाथ योगी
गद्दीनशीन महंत श्री बाबा मस्तनाथ मठ, अस्थल बोहर, रोहतक-124021 (हरियाणा)
कुलाधिपति-बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय | विधायक-तिजारा एवं पूर्व सांसद, अलवर व पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा (राजस्थान)

सुरक्षित निवेश के कई मजबूत विकल्प, मिलेगा बढ़िया रिटर्न

- पीपीएफ, एनएससी, एससीएसएस और सुकन्या जैसी योजनाएं दे रही हैं आकर्षक ब्याज और टैक्स लाभ
- कम जोखिम में स्थिर आय और लंबी अवधि में मजबूत फंड बनाने के विकल्प
- बैंक एफडी से आगे बढ़कर सोचें, सरकारी योजनाओं में छिपा है बेहतर रिटर्न

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में निवेशकों की सबसे बड़ी प्राथमिकता है पूंजी की सुरक्षा और स्थिर रिटर्न। शेयर बाजार की अस्थिरता से घबराने वाले या जोखिम कम लेना चाहने वाले लोग आमतौर पर बैंक एफडी का सहारा लेते हैं। लेकिन क्या एफडी ही एकमात्र सुरक्षित विकल्प है? असल में, सरकार समर्थित कई ऐसी योजनाएं हैं जो न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि कई मामलों में एफडी से बेहतर ब्याज भी देती हैं। आइए जानते हैं ऐसे ही भरोसेमंद निवेश विकल्पों के बारे में, जहां सुरक्षा के साथ अच्छा रिटर्न भी मिल सकता है।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

1. पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि में सुरक्षित तरीके से बड़ा फंड बनाना है, तो पीपीएफ एक बेहतरीन विकल्प है।

- निवेश अवधिः 15 वर्ष
- वर्तमान ब्याज दर : 7.1% (सरकार द्वारा तिमाही आधार पर तय)
- अधिकतम निवेश : 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- टैक्स लाभ : धारा 80सी के तहत छूट
- पीपीएफ की सबसे बड़ी खासियत है इसका ईईईई स्टेटस निवेश, ब्याज और मैच्योरिटी राशि तीनों टैक्स-फ्री होती हैं। यह योजना खासकर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो रिटायरमेंट या बच्चों की उच्च शिक्षा जैसे दीर्घकालिक लक्ष्य के लिए सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं।

2. नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (एनएससी)

- यदि आप 5 साल की अवधि के लिए सुरक्षित निवेश चाहते हैं, तो एनएससी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष
- ब्याज दर : लगभग 7.7%
- टैक्स लाभ : 80सी के तहत छूट
- एनएससी में निवेश की गई राशि सुरक्षित रहती है और तय ब्याज दर के अनुसार परिपक्वता पर रिटर्न मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए बेहतर है जो मध्यम अवधि के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहते हैं और जोखिम नहीं लेना चाहते।

3. सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम (एससीएसएस)

- यह योजना विशेष रूप से 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष (आवश्यकतानुसार बढ़ाई जा सकती है)
- ब्याज दर : लगभग 8% से अधिक (तिमाही समीक्षा के अधीन)

नियमित ब्याज भुगतान

- एससीएसएस उन सेवानिवृत्त लोगों के लिए बेहद उपयोगी है जो अपने रिटायरमेंट फंड से नियमित आय चाहते हैं। ब्याज तिमाही आधार पर मिलता है, जिससे नकदी प्रवाह बना रहता है।

4. पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम (एमआईएस)

- अगर आप सुरक्षित निवेश के साथ हर महीने नियमित आय चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम एक बेहतर विकल्प है।
- निवेश अवधिः 5 वर्ष
- ब्याज दरः लगभग 7.4%
- मासिक ब्याज भुगतान

5. सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई)

- बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए यह योजना विशेष रूप से बनाई गई है।
- पात्रताः 10 वर्ष या उससे कम आयु की बेटी
- निवेश अवधिः 15 वर्ष
- मैच्योरिटीः 21 वर्ष
- अधिकतम निवेशः 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- ब्याज दरः लगभग 8.2%
- एसएसवाई वर्तमान में सबसे अधिक ब्याज देती है।

एसआईपी संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बिना योजनाबद्ध निकासी निवेश को कर देती है बर्बाद

सिर्फ एसआईपी नहीं एसडब्लूपी भी जरूरी

बिजनेस डेस्क

जनवरी 2026 में निवेशकों ने सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए म्यूचुअल फंड में 31,000 करोड़ रुपये का निवेश किया। एसआईपी अब आदत जैसी बन गई है। यह संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बन गया है। लेकिन असली परीक्षा तब शुरू होती है जब आप इसका उपयोग करना शुरू करते हैं। बिना योजनाबद्ध निकासी रणनीति के वर्षों का अनुशासित निवेश जल्दी ही बिखर सकता है। इसलिए हर एसआईपी के साथ एक सिस्टमैटिक विदड्रॉल प्लान (एसडब्लूपी) होना भी जरूरी है। एसआईपी संपत्ति संचय का एक प्रभावी साधन है, लेकिन यह सुचारु परिणाम की गारंटी नहीं देता। इसलिए एसआईपी से बाहर निकलने का समय बेहद महत्वपूर्ण होता है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आपका एसआईपी कितने समय तक चला या आपने इसे किस बाजार परिस्थिति में शुरू किया। अंतिम चरण में बाजार में गिरावट आपकी योजनाओं को पटरी से उतार सकती है। मान लीजिए एक निवेशक ने जनवरी 2005 में एसबीआई निफ्टी इंडेक्स फंड में 10,000 रुपये की मासिक एसआईपी शुरू की। लक्ष्य था 2020 के मध्य तक घर की डाउन पेमेंट के लिए 40 लाख रुपये जुटाना। 31 जनवरी 2020 तक 18 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 40.73 लाख रुपये हो गया। लक्ष्य आसानी से हासिल होता दिख रहा था। फिर महामारी के कारण बाजार में गिरावट आई। 23 मार्च 2020 तक यह कॉर्पस घटकर 26 लाख रुपये रह गया यानी अचानक 14 लाख रुपये की कमी। पोर्टफोलियो को दोबारा संभलने में लगभग आठ महीने लग गए। यदि निवेशक ने लक्ष्य तिथि से 12-18 महीने पहले एसडब्लूपी के माध्यम से चरणबद्ध निकासी शुरू कर दी होती तो कुछ मुनाफा सुरक्षित किया जा सकता था। एसडब्लूपी मूलतः एसआईपी का उल्टा है। नियमित अंतराल पर निश्चित रकम निवेश करने के बजाय आप तय समयावधि में नियमित रूप से निश्चित राशि निकालते हैं। जैसे-जैसे लक्ष्य नजदीक आता है, एसडब्लूपी एक संतुलित और क्रमिक निकासी का मार्ग तैयार करता है।

एसडब्लूपी है वितरण की संरचना

इस संरचना के दो प्रमुख लाभ हैं। पहला यह अंतिम समय की बाजार अस्थिरता से अर्जित लाभ के एक हिस्से की सुरक्षा करता है। दूसरा जो राशि नहीं निकाली जाती, वह निवेशित बनी रहती है और अंतिम चरण में संभावित बढ़त का लाभ उठाती है। उद्योग के विशेषज्ञ अब एसआईपी और एसडब्लूपी को एक संयुक्त रणनीति के दो हिस्सों के रूप में देखते हैं। वे इस संयोजन को जीवन भर का एसआईपी बताते हैं। कमाई के वर्षों में व्यवस्थित बचत और आय कम होने पर व्यवस्थित निकासी, बिना चक्रवृद्धि की ताकत को तोड़े। असल में एसआईपी संचय का इंजन है, जबकि एसडब्लूपी वितरण की संरचना। यह दोनों मिलकर संपत्ति निर्माण, संरक्षण और वितरण का निरंतर चक्र बनाते हैं।

सेवानिवृत्ति से आगे की भी सोचें

परंपरागत रूप से एसडब्लूपी को रिटायरमेंट आय के साधन के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन यह धारणा बदल रही है। एसडब्लूपी जीवन के विभिन्न चरणों में एक लचीला और कर-कुशल नकदी प्रवाह समाधान बनकर उभर रहा है। यह लोन की ईएमआई, बच्चों की फीस या अनियमित आय से जुड़े जीवनशैली खर्च जैसे नियमित खर्चों में मदद कर सकता है। एसडब्लूपी फ्रीलांसर, कंसल्टेंट या चक्रीय आय वाले व्यवसायियों के लिए भी उपयोगी है। अधिक आय वाले महीनों में अतिरिक्त कमाई निवेश की जा सकती है, जबकि एक छोटा एसडब्लूपी निश्चित मासिक खर्चों के लिए स्थिर आय प्रदान कर सकता है। यहां तक कि एकमुश्त लक्ष्यों जैसे शादी या घर की मरम्मत के लिए भी एसडब्लूपी चरणबद्ध निकासी की सुविधा देता है, जिससे टाइमिंग जोखिम कम होता है और शेष पूंजी निवेशित बनी रहती है।

बकेट रणनीति भी बनाएं

रिटायरमेंट में हर फंड एसडब्लूपी के लिए उपयुक्त नहीं होता। विशेषज्ञ तीन-बकेट रणनीति सुझाते हैं। तीन साल के खर्च लिक्विड फंड में, चौथे से सातवें वर्ष के खर्च कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में और दीर्घकालिक निवेश इक्विटी में ताकि मुद्रास्फीति को मात दी जा सके। निकासी पहले बकेट से शुरू होती है। जैसे-जैसे वह कम होता है, दूसरे बकेट से उसे भरा जाता है और बाद में तीसरे बकेट से। यह स्तरीय संरचना निकट अवधि के खर्चों को इक्विटी की अस्थिरता से बचाती है और दीर्घकालिक वृद्धि को बनाए रखती है।

चक्र को पूरा करना जरूरी

हर वित्तीय यात्रा व्यक्तिगत लक्ष्यों, आय पैटर्न और जोखिम सहनशीलता से प्रभावित होती है। लेकिन सिद्धांत सार्वभौमिक है। वितरण योजना के बिना संचय अधूरा है। एसआईपी से एसडब्लूपी तक सुचारु संक्रमण आवश्यक है। सही तरीके से किया जाए तो यह साझेदारी चक्रवृद्धि की शक्ति को जारी रखते हुए आपको नियमित आय भी देती रहती है।

संक्रमण की योजना भी हो

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेश के तुरंत बाद एसडब्लूपी शुरू नहीं करना चाहिए। निकासी शुरू होने से पहले पोर्टफोलियो को बढ़ने का समय चाहिए। बहुत जल्दी शुरुआत करने से यदि बाजार अस्थिर हो जाए, तो मूलधन पर असर पड़ सकता है। कर दक्षता भी इसका एक बड़ा लाभ है। प्रत्येक एसडब्लूपी किस्त में मूलधन और पूंजीगत लाभ दोनों शामिल होते हैं, लेकिन कर केवल लाभ वाले हिस्से पर लगता है। कम से कम एक वर्ष तक निकासी टालने से इक्विटी निवेश दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कर के दायरे में आ जाता है, जिसमें सालाना 1.25 लाख रुपये तक के लाभ पर छूट मिलती है। अनिवार्य लक्ष्यों के लिए आदर्श रूप से लक्ष्य तिथि से 2-3 वर्ष पहले एसडब्लूपी शुरू कर देना चाहिए। भले ही कॉर्पस थोड़ा कम हो। अंतिम वर्ष तक इंतजार करने से जोखिम बढ़ जाता है। चरणबद्ध निकासी परिणामों को संतुलित बनाती है।

कितनी निकासी सुरक्षित है?

दीर्घकालिक स्थितियों जैसे सेवानिवृत्ति में निकासी दर यह तय करती है कि बचत 20-30 वर्षों तक चलेगी या समय से पहले खत्म हो जाएगी। जोखिम केवल बाजार की अस्थिरता नहीं, बल्कि सीक्वेंस-ऑफ-रिटर्न्स का भी होता है। यदि शुरुआती वर्षों में खराब रिटर्न के दौरान निकासी होती है तो कॉर्पस तेजी से घट सकता है। एसआईपी के विपरीत, जहां गिरते बाजार में अधिक यूनिट जमा होती हैं, एसडब्लूपी में गिरावट के दौरान समान नकदी प्रवाह के लिए अधिक यूनिट बेचनी पड़ती हैं। इसलिए निकासी दर संतुलित और सावधानीपूर्ण होनी चाहिए। आदर्श रूप से निकासी दर पोर्टफोलियो के दीर्घकालिक संभावित रिटर्न से कम होनी चाहिए। एक सामान्य नियम यह है कि निकासी वास्तविक रिटर्न यानी मुद्रास्फीति समायोजित रिटर्न के आधार पर तय हो। यदि अपेक्षित रिटर्न 10% और मुद्रास्फीति 5% है, तो निकासी 5% से अधिक नहीं होनी चाहिए। स्थिरता बनाए रखने के लिए निकासी दर अपेक्षित रिटर्न से 2-3 प्रतिशत अंक कम रखनी चाहिए। वैश्विक शोध अक्सर 3.5-4% को एक टिकाऊ दर मानता है, लेकिन इसकी उपयुक्तता एसेट आवंटन, जीवन प्रत्याशा और जीवनशैली की जरूरतों पर निर्भर करती है। प्रदर्शन के आधार पर समायोजित होने वाली डायनेमिक निकासी रणनीतियां भी मजबूती बढ़ा सकती हैं।

फंड तैयार करने की जल्दबाजी छोड़िए, एसआईपी को समय दें

बिजनेस डेस्क। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) आज म्यूचुअल फंड में निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका बन चुका है। छोटे-छोटे मासिक निवेश के जरिए बड़ा फंड तैयार करने का यह अनुशासित माध्यम है। लेकिन एक सवाल लगभग हर निवेशक के मन में आता है। एसआईपी में रिटर्न असली रफ्तार कब पकड़ता है? कई निवेशक 1-2 साल में शानदार मुनाफे की उम्मीद करते हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो वे एसआईपी बंद भी कर देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि एसआईपी का असली फायदा समय के साथ खुलकर सामने आता है।

शॉर्ट टर्म में क्यों निराश कर सकता है एसआईपी?

अगर आप 1 से 3 साल की अवधि में एसआईपी का प्रदर्शन देखें, तो तस्वीर उतनी आकर्षक नहीं दिखती। ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर निफ्टी 50 पर आधारित एसआईपी के रिटर्न का विश्लेषण बताता है कि छोटे समय में रिटर्न कई बार फ्लैट या निगेटिव भी रहा है।

कुछ अवधियों में

1. साल का एक्सआईआरआर रिटर्न -60% से ज्यादा तक गिरा
2. साल में -40% के आसपास
3. साल में -20% से ज्यादा गिरावट

शुरुआती रिटर्न कमजोर

यह सुनकर घबराहट होना स्वाभाविक है। लेकिन इसका कारण समझना जरूरी है। शेयर बाजार साइकिल में चलता है कभी तेजी, कभी गिरावट। यदि आपने एसआईपी की शुरुआत बाजार के ऊपरी स्तर पर की और उसके बाद गिरावट आई, तो शुरुआती रिटर्न कमजोर दिख सकते हैं। इसे ही टाइमिंग रिस्क कहते हैं। शॉर्ट टर्म में बाजार की दिशा आपके निवेश अनुभव को प्रभावित करती है।

5 साल के बाद बदलती है तस्वीर

- जैसे-जैसे निवेश की अवधि 5 साल के आसपास पहुंचती है, उतार-चढ़ाव का असर कम होने लगता है।
- 5 साल के अधिकांश रोलिंग पीरियड में एसआईपी का रिटर्न 5% से 10% के बीच रहा है। लंबी अवधि में रिकवरी का मौका मिलता है।

दो चीजें काम करती हैं

- रुपया लागत औसत : बाजार गिरने पर आपकी तय राशि से ज्यादा यूनिट्स मिलती हैं।
- कंपाउंडिंग : शुरुआती निवेश पर मिलने वाला रिटर्न आगे रिटर्न कमाता है।
- शुरुआती सालों की कमजोरी संतुलित होने लगती है और निवेश स्थिरता दिखाने लगता है।

7 साल के बाद बढ़ती है रफ्तार

- इतिहास बताता है कि 7 साल या उससे अधिक की अवधि में एसआईपी पर निगेटिव रिटर्न की संभावना लगभग खत्म हो जाती है। डबल डिजिट रिटर्न सामान्य हो जाते हैं। यहां सबसे बड़ा बदलाव बाजार में नहीं, बल्कि निवेशक के अनुभव में आता है। बाजार गिरता है, तो आपके पास रिकवरी का पर्याप्त समय होता है। तेजी आने पर आप उस पूरी रैली का हिस्सा बनते हैं। कंपाउंडिंग का प्रभाव स्पष्ट दिखने लगता है।

ऐसे समझें

उदाहरण के तौर पर, अगर कोई निवेशक हर महीने 10,000 रुपये एसआईपी करता है और औसतन 12% रिटर्न मिलता है, तो 3 साल में कुल निवेश 3.6 लाख पर फंड लगभग 4–4.5 लाख के आसपास हो सकता है। 10 साल में कुल निवेश 12 लाख पर फंड 23–24 लाख से ज्यादा हो सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

कब शुरू करें और कितना समय दें

- जितनी जल्दी शुरू करेंगे, उतना बेहतर।
- कम से कम 7–10 साल का नजरिया रखें।
- बाजार गिरने पर बंद न करें, जारी रखें।
- लक्ष्य आधारित निवेश करें।

असली रफ्तार कहां से

- पहले 2–3 सालः उतार-चढ़ाव
- 5 सालः स्थिरता
- 7 साल+: कंपाउंडिंग का प्रभाव
- 10 साल+: वास्तविक वेल्थ क्रिएशन

धैर्य ही असली रणनीति

एसआईपी कोई जादुई फार्मूला नहीं, बल्कि अनुशासित निवेश की प्रक्रिया है। छोटे समय में परिणाम आकर्षक न दिखें, लेकिन लंबी अवधि में यह प्रभावशाली बन जाता है। अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन करने का धैर्य रखते हैं और निवेश को 7–10 साल का समय देते हैं, तो एसआईपी मजबूत संपत्ति निर्माण करेगी।

क्या एसआईपी सच में बना सकती है अमीर?

नौकरीपेशा लोगों के लिए छोटी बचत को निवेश में बदलना व्यावहारिक तरीका

अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की रखता है नींव

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में हर कमाने वाला व्यक्ति चाहता है कि उसकी आय सिर्फ खर्च तक सीमित न रहे, बल्कि भविष्य में बड़ी पूंजी में बदले। नौकरीपेशा लोगों के लिए हर महीने छोटी-छोटी बचत को निवेश में बदलना सबसे व्यावहारिक तरीका है। इसी संदर्भ में एसआईपी सबसे ज्यादा चर्चा में रहता है। लेकिन सवाल यह है क्या एसआईपी वास्तव में आपको अमीर बना सकती है? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि एसआईपी कोई निवेश उत्पाद (प्रोडक्ट) नहीं, बल्कि निवेश करने का तरीका है। असल निवेश म्यूचुअल फंड में होता है और एसआईपी उस फंड में नियमित अंतराल पर तय रकम लगाने की प्रणाली है। यानी आप हर महीने एक निश्चित राशि निवेश करते हैं, चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। यही अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की नींव रखता है। अमीर बनने की संभावना इस बात पर निर्भर करती है कि आप कितने समय तक निवेश करते हैं और कितनी निरंतरता बनाए रखते हैं। शेयर बाजार से जुड़े फंड्स में ऐतिहासिक रूप से लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देखने को मिले हैं, लेकिन अल्पकाल में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है। जो निवेशक 8–10 साल या उससे अधिक का धैर्य रखते हैं, उन्हें चक्रवृद्धि का वास्तविक लाभ मिलता है। छोटी रकम भी समय के साथ बड़ी पूंजी में बदल सकती है। बशर्ते निवेश नियमित और दीर्घकालिक हो।

जल्दी अमीर बनने का शॉर्टकट नहीं

हालांकि, यह समझना भी जरूरी है कि एसआईपी "जल्दी अमीर बनने" का शॉर्टकट नहीं है। बाजार में गिरावट आएगी, रिटर्न कभी ज्यादा तो कभी कम होंगे। जो लोग कुछ महीनों में चमत्कार की उम्मीद करते हैं, वे अक्सर निराश होते हैं। असली ताकत अनुशासन और समय में छिपी है, न कि तात्कालिक मुनाफे में। जोखिम, रणनीति और समझदारी का संतुलन एसआईपी बाजार से जुड़ा निवेश है, इसलिए इसमें जोखिम भी शामिल है। यह फिक्स्ड डिपॉजिट या पीपीएफ की तरह पूरी तरह सुरक्षित विकल्प नहीं है। सही फंड का चयन, अपने जोखिम स्तर की पहचान और निवेश लक्ष्य की स्पष्टता बेहद जरूरी है। यदि आपका लक्ष्य 10-15 साल दूर है जैसे रिटायरमेंट या बच्चों की पढ़ाई तो इक्विटी आधारित फंड उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन कम अवधि के लक्ष्य के लिए संतुलित या डेट फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

बाजार गिरने पर घबराएं नहीं

बाजार गिरने पर घबराहट में एसआईपी रोक देना सबसे बड़ी गलती मानी जाती है। दरअसल, गिरावट के समय कम कीमत पर अधिक यूनिट मिलती हैं, जो बाजार सुधरने पर बेहतर रिटर्न दे सकती हैं। यही "रूपीकॉस्ट एवरेजिंग" का फायदा है। इसलिए समझदारी यही है कि उतार-चढ़ाव को निवेश यात्रा का हिस्सा मानें। एक और आम गलती है बहुत सारे फंड में निवेश कर देना। अलग-अलग सलाह के चक्कर में पोर्टफोलियो इतना जटिल हो जाता है कि निगरानी मुश्किल हो जाती है। बेहतर है कि अपने लक्ष्य के अनुसार सीमित और संतुलित फंड चुनें। गुणवत्ता पर ध्यान दें, संख्या पर नहीं। एसआईपी की एक बड़ी खूबी लचीलापन भी है। आपकी आय बढ़े तो निवेश राशि बढ़ा सकते हैं, जरूरत पड़े तो घटा या रोक भी सकते हैं। यह कोई कठोर अनुबंध नहीं है। लेकिन बार-बार बदलाव से बचना चाहिए; रणनीति सोच-समझकर तय करें।

यह जानना जरूरी

एसआईपी आपको रातोंरात अमीर नहीं बनाएगी, लेकिन समय, अनुशासन और सही रणनीति के साथ यह मजबूत संपत्ति निर्माण का प्रभावी साधन बन सकती है। समझदारी से किया गया निवेश, धैर्य और लक्ष्य-आधारित योजना यही वह सूत्र है जो सामान्य आय वाले व्यक्ति को भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सकता है। अमीरी केवल बड़ी कमाई से नहीं, बल्कि सही निवेश आदतों से भी आती है।

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में यह सबसे लुभावना मौका

सस्ती किस्तों का जाल : क्या सच में 'नो कॉस्ट' है ईएमआई

ईएमआई में नहीं दिखता ब्याज, लेकिन कीमत बदल जाती है

जानकारी

बिजनेस डेस्क

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में एक लाइन सबसे ज्यादा लुभाती है वो है 'नो कॉस्ट' ईएमआई। छोटी-छोटी किस्तें देखकर खरीदारी का फैसला आसान लगने लगता है। दिमाग कहता है "इतनी सी ईएमआई है, अभी ले लेते हैं।" लेकिन निवेश और व्यक्तिगत वित्त के नजरिए से देखें तो 'नो कॉस्ट' ईएमआई उतनी सरल नहीं, जितनी दिखाई देती है। अब सवाल यह है कि क्या वाकई इसमें कोई लागत नहीं होती? या फिर लागत सिर्फ नजर नहीं आती?

'नो कॉस्ट' ईएमआई होती क्या है?

सरल शब्दों में, 'नो कॉस्ट' ईएमआई का मतलब है कि आप किसी प्रोडक्ट की कीमत किस्तों में चुकाते हैं और आपको अलग से ब्याज नहीं देना पड़ता। यानी कुल ईएमआई जोड़ने पर रकम उतनी ही होगी जितनी प्रोडक्ट की कीमत। लेकिन बैंक या फाइनेंस कंपनी बिना कमाई के पैसा उधार नहीं देती। तो फिर ब्याज कौन दे रहा है? यहीं से असली खेल शुरू होता है।

बैंक की कमाई कैसे होती है?

जब आप ईएमआई चुनते हैं, तो आमतौर पर प्रोडक्ट पर मिलने वाला सीधा डिस्काउंट कम कर दिया जाता है। उसी घटे हुए डिस्काउंट से बैंक का ब्याज एडजस्ट कर दिया जाता है। मतलब ये कि कागजों में आपको "ब्याज नहीं" दिखता है। लेकिन आपको मिलने वाला फायदा पहले ही कम कर दिया जाता है। बैंक को उसका हिस्सा मिल जाता है, और ग्राहक को लगता है कि वह बिना अतिरिक्त खर्च के सुविधा ले रहा है।

एक उदाहरण से समझिए

- मान लीजिए आप 60,000 रुपये का स्मार्टफोन खरीदना चाहते हैं।
- फुल पेमेंट पर ऑफरः 5,000 रुपये का सीधा डिस्काउंट
- अंतिम कीमतः 55,000 रुपये
- अब आप नो कॉस्ट ईएमआई चुनते हैं डिस्काउंट घटकर 2,500 रुपये रह जाता है
- नई कीमतः 57,500 रुपये
- आपने शुरुआत में ही 2,500 रुपये ज्यादा दे दिए।
- अगर इसमें 499 प्रोसेसिंग फीस और उस पर 18% जीएसटी जोड़ दें, तो कुल खर्च लगभग 58,000 रुपये से ऊपर पहुंच सकता है।
- दिखने में ईएमआई आसान थी, लेकिन कुल भुगतान बढ़ चुका है।

सबसे बड़ा भ्रम हैः ईएमआई

- सुविधा=सस्ता सौदा
- असल में ईएमआई सिर्फ भुगतान को छोटे हिस्सों में बांटती है। खर्च कम नहीं करती।
- छोटी ईएमआई दिमाग पर दबाव कम डालती है। एकमुश्त 55,000 देने से ज्यादा आसान लगता है 4,800 रुपये की मासिक किस्त देना। लेकिन कुल रकम का हिसाब अक्सर नजरअंदाज हो जाता है।
- यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव है—छोटे नंबर कम डराते हैं।
- छिपे हुए चार्ज जिन पर कम ध्यान जाता है

ये अतिरिक्त खर्च संभव

- प्रोसेसिंग फीस : 199 से 999 रुपये या उससे अधिक
- जीएसटी : प्रोसेसिंग फीस या ब्याज वाले हिस्से पर 18%
- ईएमआई कन्वर्जन चार्ज

- लेट पेमेंट पेनल्टी (यदि किस्त समय पर न भरी जाए)
- ये सभी बातें अक्सर शर्तों में छिपी होती हैं, प्रोडक्ट पेज पर बड़े अक्षरों में नहीं लिखी होतीं।
- तुलनाः फुल पेमेंट बनाम नो कॉस्ट ईएमआई
- भुगतान तरीका दिखने वाली कीमत संभावित असली खर्च
- फुल पेमेंट 55,000 55,000
- नो कॉस्ट ईएमआई 57,500 58,000+

यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन महंगे इलेक्ट्रॉनिक्स, फर्नीचर या एसी जैसे उत्पादों में यह हजारों रुपये तक पहुंच सकता है।

कब नो कॉस्ट ईएमआई सही विकल्प

हर बार नो कॉस्ट ईएमआई गलत नहीं होती। कुछ परिस्थितियों में यह उपयोगी हो सकती है। आपके पास पूरी रकम उपलब्ध नहीं है। ईएमआई लेने से डिस्काउंट कम नहीं हो रहा। प्रोसेसिंग फीस शून्य है। आप कैश फ्लो मैनेजमेंट के लिए भुगतान फैलाना चाहते हैं। अगर इन शर्तों में से अधिकतर पूरी होती हैं, तो ईएमआई एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है।

निवेश के नजरिए से

व्यक्तिगत वित्त का एक मूल सिद्धांत है खर्च से पहले गणित करें। यदि आपके पास पर्याप्त बचत है और आप फुल पेमेंट कर सकते हैं, तो अक्सर वह सस्ता विकल्प होता है। ईएमआई चुनने से पहले यह सोचें।

सोचें क्या यह जरूरत है

- क्या ईएमआई के कारण मैं अतिरिक्त खर्च कर रहा हूं?
- क्या मैं कई ईएमआई का बोझ एक साथ उठा रहा हूं?
- कई बार लोग एक साथ 3-4 ईएमआई ले लेते हैं। छोटी-छोटी किस्तें मिलकर बड़ी मासिक देनदारी बन जाती हैं।

मार्केटिंग बनाम समझदारी

आज का ई-कॉमर्स माहौल भावनात्मक फैसले लेने को प्रेरित करता है। अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें। लेकिन समझदार खरीदार पहले कैलकुलेशन करता है, फिर निर्णय लेता है। नो कॉस्ट ईएमआई धोखा नहीं है, लेकिन अधूरी जानकारी नुकसान में बदल सकती है। नो कॉस्ट ईएमआई सुविधा देती है, लेकिन हर सुविधा की एक कीमत होती है चाहे वह सीधी दिखे या छिपी हुई हो। इसलिए पहले पूरा गणित समझें, कुल भुगतान जोड़ें, और फिर फैसला लें। क्योंकि समझदारी से किया गया खर्च ही असली बचत है।

खबर संक्षेप

दहेज प्रताड़ना मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज की मांग पर विवाहित को प्रताड़ित करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने जिले के एक गांव निवासी विवाहिता की शिकायत के आधार पर दोनों पक्षों के बीच सुलहनामा कराने के प्रयास किए थे। कई बार काउंसलिंग कराए जाने के बाद भी दोनों पक्षों में समझौता नहीं हुआ था। पुलिस ने इसके बाद गत वर्ष 11 नवंबर को सुसराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में हसनपुरा निवासी मयंक को गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसे पुलिस बेल पर पर रिहा कर दिया गया।

सड़क हादसे के बाद फरार चालक काबू

जाटूसाना। पुलिस ने सड़क हादसे के बाद मौके से फरार एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। बेरली कलां के निकट हुए हादसे के बाद पुलिस ने घायल के बयान पर 6 फरवरी को वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। हादसे में घायल युवक को गंभीर चोटें आई थीं। चालक मौके से फरार होने में कामयाब हो गया था। पुलिस ने मामले की जांच करते हुए यूपी के बंदापुर निवासी ट्राला चालक जावेद को गिरफ्तार कर लिया। उसका ट्रॉला भी पुलिस ने कब्जे में ले लिया।

अमानत में खयानत का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने अमानत में खयानत करने के आरोप में दर्ज किए गए मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर यूपी के मंदोरा निवासी मोनिश के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस वर्तमान में धारूहेड़ा के सेक्टर-6 में रह रहा है। 7 फरवरी को दर्ज मामले में आरोपी फरार हो गया था। पुलिस ने जांच के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

वैवाहिक कार्यक्रम से व्यक्ति की बाइक चोरी

कोसली। बव्वा गांव में लगन कार्यक्रम में शामिल होने गए व्यक्ति की मोटरसाइकिल को गांव के ही दो व्यक्ति चुरा कर ले गए। बव्वा निवासी सुधीर कुमार ने नाहड़ पुलिस चौकी में दी शिकायत बताया कि 11 फरवरी रात को वह गांव के अजीत के यहां लग्न कार्यक्रम में शामिल होने गया था। मोटरसाइकिल को बाहर खड़ी करके कार्यक्रम में चला गया। वापस आया तो मोटरसाइकिल गायब थी। उन्होंने एक सप्ताह तक मोटरसाइकिल की तलाश की। इस दौरान उन्हें पता चला कि मोटरसाइकिल गांव के ही दो लोगों ने चुराई है। सुधीर ने शुक्रवार को दोनों के नाम सहित नाहड़ पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।

कक्षा 6 से 12 तक के छात्रों में रचनात्मक सोच व नवाचार को बढ़ावा देना योजना का उद्देश्य

अटल इनोवेशन मिशन : जिले के 17 राजकीय स्कूलों में नई अटल टिंकरिंग लैब होंगी स्थापित

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

अटल टिंकरिंग लैब भारत सरकार के नीति आयोग की ओर से अटल इनोवेशन मिशन के तहत स्थापित एक अभिनव कार्यक्षेत्र है, जो स्कूलों में कक्षा छठी से 12वीं तक के विद्यार्थियों में रचनात्मकता, जिज्ञासा व वैज्ञानिक सोच विकसित करता है। यह डू इट योरसेल्फ के सिद्धांत पर आधारित है, जहां छात्र रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, थ्री डी प्रिंटर और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उपकरणों का उपयोग करके नई तकनीकें सीखते हैं। अभी तक भारत वर्ष में सरकार की ओर से 10 हजार से ज्यादा लैब स्थापित की जा चुकी हैं।

जिला विज्ञान विशेषज्ञ रविंद्र कुमार ने बताया कि शिक्षा विभाग की ओर से प्राप्त पत्र के अनुसार अब हरियाणा के 391 राजकीय विद्यालयों में अटल टिंकरिंग लैब स्थापित की जाएगी, जिसमें से जिला महेंद्रगढ़ के 17 राजकीय विद्यालय है। केंद्रीय बजट 2025-26 में अगले पांच वर्षों में 50000 नए अटल टिंकरकंग लैब स्थापित करने की घोषणा की गई है, जो विशेष रूप से सरकारी स्कूलों पर केंद्रित होगा। इनका उद्देश्य कक्षा छठी से 12वीं तक के छात्रों में रचनात्मक सोच व नवाचार को बढ़ावा देना है।

उन्होंने बताया कि जिले के तीन राजकीय विद्यालयों आरोही मॉडल स्कूल मंढाणा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नीरपुर व राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय महेंद्रगढ़ में पहले से ही अटल टिंकरिंग लैब सरकार की ओर से स्थापित की जा चुकी है।

नारनौल। लैब में नई तकनीकें सीखते विद्यार्थी। *फोटो : हरिभूमि*

व्यावसायिक समझ होती है पैदा

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. विश्वेश्वर कौशिक ने बताया कि सरकार की इस तरह की योजनाओं से विद्यार्थी रटने के बजाय, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग व गणित की अवधारणाओं को मॉडल बनाकर सीखते हैं। विद्यार्थियों में वास्तविक जीवन की समस्याओं को तकनीकी समाधानों के माध्यम से सुलझाने की क्षमता विकसित होती है और उनमें व्यावसायिक समझ व इनोवेटिव सोच पैदा होती है।

अब इन 17 विद्यालयों में बनाई जाएगी लैब

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नायन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाघोत, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खेड़ी तलवाना, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अकोदा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जैलाफ, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बोचडिया, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नांगल चौधरी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निवाजनगर, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निजामपुर, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय धौलेड़ा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोरियावास, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जड़वा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बूढ़वाल, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुचावास, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाली, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सतनाली व राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नियामतपुर शामिल है।

नगर परिषद परिसर में 15 नई गाड़ियां पहुंची, जिनसे किया जाएगा कचरा संग्रहण

5 साल के लिए नप ने दिया कम्पनी को ठेका

नई एजेंसी करेगी शहर में डोर टू-डोर कूड़ा उठान कार्य

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर में अब डोर-टू-डोर कूड़ा उठान का काम नई एजेंसी के माध्यम से किया जाएगा। जिसके लिए नगर परिषद ने ठेका क्लासिक मैन पावर कंपनी को पांच साल के लिए लगभग साढ़े 12 करोड़ रुपये में दिया है। जानकारी के अनुसार नई एजेंसी सोमवार से अपना काम शुरू कर देगी। इसके लिए नगर परिषद परिसर में 15 नई गाड़ियां भी पहुंच चुकी हैं, जिनका उपयोग शहर व परिषद क्षेत्र के गांवों से कचरा संग्रहण के लिए किया जाएगा।

बता दें कि इस बार कचरा उठान व्यवस्था में विशेष बदलाव किया गया है। नई गाड़ियों में एक ही वाहन के भीतर गीले व सूखे कचरे के लिए अलग-अलग ट्रॉलियां बनाई गई हैं, ताकि कचरे का वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण संभव हो सके। पहले दोनों प्रकार का कचरा एक साथ ही डाला जाता था, जिससे आगे प्रक्रिया में दिक्कतें आती थी। नगर परिषद अधिकारियों के अनुसार नई एजेंसी से सफाई व्यवस्था में सुधार और अधिक प्रभावी कार्य की उम्मीद है। शहर में कुल 31 वार्ड हैं, जिनसे प्रतिदिन कचरा उठान किया जाएगा। नगर परिषद क्षेत्र में शामिल नसीबपुर, नीरपुर, पटीकरा सहित अन्य गांवों से कचरा उठाना भी एजेंसी की जिम्मेदारी होगी। ग्रामीण क्षेत्रों से नियमित कचरा उठान अब तक चुनौती बना रहा है, जिसे नई व्यवस्था से बेहतर करने का लक्ष्य रखा गया है। लोगों को किया जाएगा जागरूक इसके साथ-साथ लोगों को जागरूक करने के लिए अभियान भी चलाया जाएगा। घर-घर जाकर नागरिकों को गीले और सूखे कचरे को अलग रखने, कूड़ा निर्धारित समय पर देने व कचरा निस्तारण के तरीकों के बारे में जानकारी दी जाएगी। अधिकारियों का कहना है कि आमजन के सहयोग से ही शहर को स्वच्छ तथा सुंदर बनाया जा सकता है।

नारनौल। नगर परिषद भवन। *फोटो : हरिभूमि*

क्या कहते है नगर परिषद जेई

इस बारे में नगर परिषद के जेई विकास शर्मा ने बताया कि शहर में डोर-टू-डोर कूड़ा उठाने वाली नई कंपनी सोमवार से काम शुरू कर देगी। इसके लिए एजेंसी ने पूरी तैयारी कर ली है। इस बार एक ही ट्रॉली में दो पार्ट कर सूखे व गीले कचरे को अलग-अलग डाला जाएगा।

सीआईए ने स्मैक सहित तस्कर व सप्लायर दोनों को दबोचा

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में नशीला पदार्थ तस्कर। फोटो : हरिभूमि

■ आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस के तहत केस दर्ज किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

सीआईए धारूहेड़ा ने स्मैक सहित तस्कर व सप्लायर दोनों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। तस्कर की पहचान गांव ढालियावास निवासी धर्मबीर उर्फ मोटा तथा सप्लायर की पहचान गांव ढालियावास निवासी इंद्रजीत उर्फ चुर्री के रूप में हुई है। सीआईए धारूहेड़ा प्रभारी निरीक्षक योगेश हुड्डा ने बताया कि 20 फरवरी को उप निरीक्षक कृष्ण कुमार अपनी टीम के साथ राजेश पायलेट चौक पर मौजूद थे। इस दौरान सूचना मिली कि धर्मबीर उर्फ मोटा निवासी गांव ढालियावास नशीला पदार्थ स्मैक बेचने का अवैध काम करता है तथा ढालियावास स्कूल के पास खाली प्लाट के पास स्मैक बैच रहा है। सूचना पर पुलिस टीम ने आरोपी को 7 ग्राम नशीला पदार्थ स्मैक सहित काबू कर लिया। आरोपी से पूछताछ करने के बाद पुलिस ने नशीले पदार्थ की सप्लाई करने वाले आरोपी गांव ढालियावास निवासी इंद्रजीत उर्फ चुर्री को भी धर दबोचने में सफलता हासिल की।

तेज रफ्तार बस ने दो गोवंश को मारी टक्कर

नारनौल। नांगल चौधरी रोड पर नई अनाज मंडी क्षेत्र में शुक्रवार देर रात तेज रफ्तार रोडवेज बस ने सड़क किनारे खड़े दो गोवंशों को टक्कर मार दी। जिससे दोनों गोवंशों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद बस चालक वाहन लेकर मौके से फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते ही आसपास के लोग मौके पर एकत्रित हो गए और हादसे को लेकर रोष व्यक्त किया। मंडी के दुकानदार नितेश अग्रवाल ने बताया कि वह दुकान से घर जा रहा था। उसने देखा कि मंडी के गेट के सामने दो गोवंश खड़े थे। उसको एक रोडवेज बस ड्राइवर ने टक्कर मारी। जिससे एक गोवंश तो करीब 100 मीटर दूर जाकर गिरा। वहीं एडवोकेट हितेश ने बताया कि गोवंशों को इस प्रकार टक्कर मारकर फरार होना बेहद गैरजिम्मेदाराना कृत्य है। आरोपित ड्राइवर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची तथा स्थिति को संभाला।

राज स्कूल के विद्यार्थियों का जेईई मेन्स में शानदार प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से घोषित जेईई मेंस के परिणामों में राज इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी शैक्षणिक श्रेष्ठता सिद्ध की। छात्र आर्यन ने 99.83 प्रतिशत, अभिनव ने 99.82 प्रतिशल और रूपेश ने 99.23 पर्सेंटाइल अंक प्राप्त कर शीर्ष स्थान हासिल किया। इनके अलावा तन्मय कौशिक, सिद्धार्थ, तन्मय सिंह, शुभम यादव, शुभम यादव, निशिकांत, हेमंत, रिया, पीयूष, लीना, जतिन, स्नेहा तथा खुशी यादव ने भी शानदार स्कोर प्राप्त कर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया। स्कूल चेयरमैन राजेंद्र सैनी ने कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत और शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन का परिणाम है। निदेशक नवीन सैनी, जितेन्द्र सैनी, हेमंत सैनी और प्राचार्य कुलदीप कुमार ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए सम्मानित किया।

रेवाड़ी। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए स्कूल प्रबंधन। फोटो : हरिभूमि

बाल विवाह रोकथाम पर निकाली जागरूकता रैली

नारनौल। सोसायटी फॉर एजुकेशन एंड वैलफेयर एक्टिविटिज सेवा संस्था की ओर से बालविवाह रोकथाम अभियान के तहत गांव बुचावास जागरूकता रैली निकाली गई। जिसमें राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुचावास के बच्चों ने भाग लिया। प्राचार्य बिरेंद्र ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। स्कूल के अध्यापकों व अन्य सामाजिक व्यक्तियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन सेवा संस्था की ओर से संचालित एक्सैस टू जस्टिस प्रोग्राम फॉर चिल्ड्रन परियोजना के तहत किया गया। सेवा संस्था कार्यकर्ता हेमंत शर्मा ने बताया कि रैली विद्यालय से निकलकर गांव के मुख्य रस्ते से होते हुए बस स्टैंड होते हुए वापस स्कूल में पहुंची। सेवा संस्था से दरियाव सिंह ने बाल विवाह पर जागरूकता करते हुए बच्चों को बाल विवाह को रोकने का आग्रह किया। सेवा संस्था प्रतिनिधि मोहित ने बताया कि बाल विवाह से बच्चों का भविष्य अंधकार में चला जाता है।

प्रतिबंधित चाइनीज मांझे को लेकर चलाया सघन चेकिंग अभियान

■ किसी भी दुकान से चाइनीज मांझा या कोई अन्य संदिग्ध सामग्री बरामद नहीं हुई

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

पुलिस ने प्रतिबंधित चाइनीज मांझे को लेकर सघन चेकिंग अभियान चलाया। एसपी पूजा वशिष्ठ के सख्त निर्देशों की पालना कर शहर थाना प्रभारी एसआई पवन ने अपनी पुलिस टीम के साथ शहर के बाजार और पतंग-डोर विक्रेताओं की दुकानों पर औचक छापेमारी की। यह कदम त्योहारी सीजन के दौरान चाइनीज मांझे से होने वाली जानलेवा दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एहतियातन उठाया गया है।

शहर महेंद्रगढ़ के विभिन्न स्थानों पर की गई इस व्यापक छापेमारी और चेकिंग के दौरान पुलिस टीम ने दुकानों के स्टॉक की गहनता से जांच की। जांच अभियान के दौरान किसी भी दुकान से चाइनीज मांझा या कोई अन्य संदिग्ध सामग्री बरामद नहीं हुई। इस चेकिंग अभियान के दौरान, एसएचओ शहर ने सभी दुकानदारों को स्पष्ट और सख्त हिदायत दी है कि भविष्य में भी किसी भी परिस्थिति में चाइनीज या प्लास्टिक नायलॉन का मांझा न तो अपनी दुकान में रखें और न ही बेचें। यदि कोई भी व्यक्ति या दुकानदार इस जानलेवा और प्रतिबंधित मांझे की बिक्री या भंडारण करता हुआ पाया गया, तो उसके खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। कनीना में भी चाइनीज मांझे की रोकथाम को लेकर थाना शहर कनीना की पुलिस टीम द्वारा अलग-अलग स्थानों पर रेड की गई। वहां भी कोई संदिग्ध सामान नहीं मिला, जिस पर टीम द्वारा सभी दुकानदारों को चाइनीज मांझा न रखने और न बेचने के बारे में हिदायत दी गई।

महेंद्रगढ़। दुकान पर चेकिंग करती पुलिस। *फोटो : हरिभूमि*

श्रीश्याम सेवा मंडल की निरंतर सेवा समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत: अमित शर्मा

सेवा शिविर सद्भाव व आध्यात्मिक ऊर्जा का करते हैं संचार: पवन बाछौदिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

श्रीश्याम सेवा मंडल श्रीश्याम मंदिर कमेटी अटेली मंडी की ओर से पिछले 33 वर्षों से खाटूश्याम जाने वाले पद यात्रियों के लिए निरंतर सेवा शिविरों का आयोजन करना अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक कार्य है। यह शिविर केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि सेवा, समर्पण और सामाजिक एकता का सशक्त उदाहरण है। सावन मास में शिव भक्तों एवं फाल्गुन मास में श्याम भक्तों के लिए निःशुल्क देसी घी का भोजन, विश्राम व्यवस्था, केसर युक्त दूध, गोंद के लड्डू तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराना वास्तव में पुण्य का कार्य है।

उक्त विचार जनसेवा मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन बाछौदिया ने मुख्य अतिथि के रूप में पुलिस थाना अटेली मंडी के समीप आयोजित श्रीश्याम सेवा मंडल अटेली के 33वें सेवा शिविर के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा, प्रसिद्ध शिक्षाविद व समाजसेवी दीपक शर्मा ने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में भाईचारा, सद्भाव व आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है तथा युवा पीढ़ी को सेवा भावना की प्रेरणा मिलती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीश्याम सेवा मंडल के अध्यक्ष कमलेश सैनी ने की। कार्यक्रम में विशेष रूप से बद्रीनाथ धाम से पधारे महाराज सुखराम दास उपस्थित रहे और उनके सानिध्य में सर्वप्रथम मंडल की ओर से हवन-यज्ञ में आहुति देकर पूजन का शुभारंभ किया गया।

श्याम सेवा मंडल के संस्थापक व अध्यक्ष कमलेश सैनी जो पिछले 33 वर्षों से इस सेवा शिविर का निरंतर संचालन कर रहे हैं उन अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बाबा श्याम की असीम कृपा और सभी के सहयोग से सेवा की यह ज्योति निरंतर प्रज्वलित है। उन्होंने क्षेत्रवासियों व भक्तजनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप सभी की उपस्थिति हमें नई ऊर्जा प्रदान करती है। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि व अन्य विशिष्ट अतिथियों का पगड़ी पहनाकर, फूलमालाएं एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया।

नारनौल। श्रीश्याम सेवा शिविर का शुभारंभ करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

ये रहे मौजूद

इस मौके पर मंडल के कोषाध्यक्ष दिनेश जिंदल, सचिव नवनीत जिंदल, प्रबंधक महेश जांगिड़, पवन गोयल, अनिल जांगिड़, ललित अग्रवाल, दीपक गुप्ता, पुष्पा दीवान, पूजा सोनी, शीला सैनी, शकुंतला सैनी, गोविंद सोनी, मुकेश गर्ग, जगमल रोहिल्ला, चेतन प्रकाश, यश, तम्मना कुमारी, अंशू गोयल, निशा गोयल, रुक्मणी देवी, पायल जिंदल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

रेवाड़ी। डूंगरवास से खाटूधाम के लिए रवाना होते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

डूंगरवास से श्याम भक्त निशान लेकर खाटूधाम रवाना

रेवाड़ी। दिल्ली रोड स्थित गांव डूंगरवास से श्री श्याम प्रभु खाटू वाले की 36वीं निशान पदयात्रा श्री श्याम श्रद्धालु मंडल के प्रधान बाबू चंद्रप्रकाश की अगुवाई में रवाना हुई। श्रद्धालु हाथों में श्याम ध्वजा लेकर भजनों पर थिरकते हुए खाटूधाम के लिए रवाना हुए। चंद्रप्रकाश ने बताया कि गांव से प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में श्याम प्रेमी खाटूधाम की पदयात्रा करते है। श्याम प्रेमियों का दल 25 फरवरी को श्री श्याम प्रभु के चरणों में ध्वजा अर्पित करेंगे। पदयात्रा में पिंकी, राजबाला, सावित्री, संदीप, अनूप, संजय नंबरदार, कालू, राजेश कुमार, उमेश, गीता, लीलावती, कमलजीत, अतुल, बबलू, प्रवीण, मनीष व राकेश सहित अनेक श्याम प्रेमी शामिल थे।

ज्ञानस्वरूप भारद्वाज का संपूर्ण जीवन अनुकरणीय रहा: कमांडेंट

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

क्षेत्र के वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी ज्ञानस्वरूप भारद्वाज 85 वर्ष का शनिवार को सांसारिक यात्रा पूरी करके परलोक गमन हो गया। बड़े ही सम्मान के साथ उनकी अंतिम यात्रा निकली, जिसमे क्षेत्र के गणमान्य लोग शामिल हुए। उनका दाहसंस्कार रेवाड़ी रोड स्थित स्वर्गाश्रम में किया गया। मुखाग्नि उनके पुत्र पुनीत भारद्वाज ने दी। उनके भतीजे भाजपा नेता गोविंद भारद्वाज, सेवा भारती दिल्ली के संगठन मंत्री सुखदेव भारद्वाज, सिद्धार्थ भारद्वाज, जगदीश चंद शर्मा अटेली सहित पूरे परिवार के शोकाकुल सदस्य व रिस्तेदार मौजूद रहे। उनके बचपन के मित्र पूर्व कमांडेंट आर के स्वामी व राधेलाल सोनी ने बताया कि ज्ञानस्वरूप भारद्वाज का संपूर्ण जीवन ही बड़ा अनुकरणीय रहा है। उन्होंने बाल्यकाल में पहलवानी, युवावस्था में भारतीय सेना में देश सेवा की। तत्पश्चात पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी तेज तर्रार, निर्भीक लेखनी के लिए जाने जाते रहे। 1965 व 1971 के युद्ध मे सेना में रहकर देश भक्ति व वीरता का परिचय दिया। सेवानिवृत्ति के बाद वे श्रीराम हनुमान गुणगान मंडल के संस्थापक व संरक्षक रहे तथा उन्होंने श्रीराम नाम को घर घर पहुंचाने का कार्य किया। उन्होंने अपने सामाजिक जीवन में गोपाल गोशाला के प्रधान व प्रेस क्लब के प्रथम प्रधान सहित अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहते हुए अनूठी मिसाल पेश की।

ये हुए शामिल

अंतिम यात्रा में गौड़ सभा के प्रधान राकेश मेहता एडवोकेट, पूर्व चैयरमेन गोपाल शरण गर्ग, प्रेम सैनी, सत्यव्रत शास्त्री, नरेंद्र झिमरिया, बेगराज गोयल, महावीर प्रसाद अग्रवाल, मदन मोहन संघी, महेश शर्मा, क्रांति निर्मल शास्त्री, मनीष शास्त्री, अनिल भारद्वाज एडवोकेट, भाजपा मंडल अध्यक्ष हेमंत चौबे, मनोज निर्मल, राजेश बंटी, विजय गोस्वामी, विकास अग्रवाल, संदीप संघी, वासुदेव यादव, विनय शर्मा, योगेश शर्मा, कुलभूषण शर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए।

हिंदू समाज की ओर से वीर गोगा मंदिर में हिंदू सम्मलेन का आयोजन

अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक चुनौतियों का सामना करे हिंदू समाज

रेवाड़ी। हिंदू सम्मेलन में मंच पर मौजूद अतिथिगण तथा सम्मेलन में मौजूद महिलाएं व बच्चे। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

हिंदू समाज की ओर से शनिवार को वीर गोगा मंदिर में हिंदू सम्मलेन का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में हिंदू समाज के लोग शामिल हुए। सम्मेलन में शहबाजपुर पदैयावास, कोनसीवास व बैरियावास सहित आसपास की कॉलोनियों के लोगों की भागेदारी रही। सम्मेलन में हिंदू एकता को मजबूत करने और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा पर चर्चा की गई। सम्मेलन में प्रांत प्रचारक डा. सुरेंद्रपाल ने आरएसएस की स्थापना से लेकर अब तक की उपलब्धियों और समाज में लाए गए पांच प्रमुख परिवर्तनों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदू समाज को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक चुनौतियों का सामना करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आरएसएस ने पिछले 100 वर्षों में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और सेवा के माध्यम से लाखों युवाओं को प्रेरित किया है। आज का सम्मेलन इसी यात्रा का एक हिस्सा है, जो हिंदू समाज को एकजुट करने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि आरएसएस संगठन आज दुनिया के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठनों में से एक है।

साध्वी दीपांतर भारती ने हिंदू संस्कृति पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में कलश यात्रा का आयोजन भी किया गया तथा। विद्यार्थियों ने हिंदू संस्कृति पर सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। सम्मेलन में वक्ताओं ने हिंदू समाज की वर्तमान चुनौतियों, जैसे धर्मांतरण, सांस्कृतिक आक्रमण और सामाजिक एकता पर भी चर्चा की। सभी ने राष्ट्र की एकता और अखंडता की शपथ ली। कार्यक्रम संयोजक शिव कुमार ने कहा कि ऐसे सम्मेलनों से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

पांच प्रमुख परिवर्तनों पर दिया जोर

महंत समर्पणानंद ने आरएसएस द्वारा लाए गए पांच प्रमुख परिवर्तनों पर जोर दिया। उन्होंने सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी जीवन शैली और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इन पांच परिवर्तनों को व्यवहार में अपनाकर समाज आत्मनिर्भर और सुदृढ़ बन सकता है। आज के समय में प्रत्येक नागरिक को इन विषयों पर आत्ममंथन करने की आवश्यकता है।

सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक चुनौतियों का सामना करना चाहिए

ये रहे सम्मेलन में मौजूद

इस अवसर पर आयोजन समिति से सतबीर, सूबेदार धन सिंह, मनोज शहबाजपुर, बिजेंद्र पदैयावास, सुनील कोनसीवास, चंद्रकांत बैरियावास, धीरज, गोविंद, राजकुमार, सीए कश्यप, सीए यशपाल, डा. हेमंत, महेश यादव, नगर संयोजक डा. रामबाबू यादव, नगर संरक्षक अजय मित्तल, संघ से योगेश त्यागी, प्रदीप प्रचारक, मनीष प्रचारक व परमिंदर प्रचारक सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

खबर संक्षेप

गवर्नमेंट बॉयज स्कूल के दो छात्रों ने जेईई मेंस में लहराया परचम

रेवाड़ी। राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के होनहार छात्र मनीष और दीपांशु ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा यानि जेईई मेंस में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय और जिले का नाम रोशन किया है। शनिवार को विद्यालय परिसर में आयोजित सम्मान समारोह में प्राचार्य विनोद यादव ने दोनों मेधावी छात्रों को फूल-मालाएं पहनाकर और उपहार भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर प्राचार्य विनोद यादव ने कहा कि सीमित संसाधनों के बावजूद सरकारी स्कूल के बच्चों ने अपनी कड़ी मेहनत से यह सिद्ध कर दिया है कि प्रतिभा किसी परिचय की मोहताज नहीं होती। छात्रों की इस सफलता में उनके शिक्षकों का विशेष योगदान रहा। समारोह में पीसीएम विभाग से कविता, पूजा शर्मा और सुनीता कुमारी उपस्थित रहीं, जिनके मार्गदर्शन में छात्रों ने भौतिकी, रसायन और गणित में शानदार अंक अर्जित किए। शिक्षक रश्मि शर्मा, जितेन्द्र यादव व मनोज वशिष्ठ ने भी छात्रों को बधाई दी।

सड़क पर ट्रॉला फंसने से लगा रहा जाम कसोला चौक यातायात बुरी तरह प्रभावित

रेवाड़ी। कसोला चौक पर शनिवार दोपहर बाद एक ट्रॉला सड़क पर फंस गया, जिससे चौक पर घंटों जाम लगा रहा। पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद जाम खुलवाया। इस दौरान स्कूल बसों में बैठे मासूम बच्चों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। दोपहर करीब ढाई बजे एक ट्रॉला चौक के पास बंद हो गया। इससे रेवाड़ी व कोटकासिम के बीच आवागमन करने वाले वाहनों के साथ-साथ नेशनल हाइवे से शहर की ओर आने वाले वाहन भी जाम में फंस गए। देखते ही देखते गढ़ी बोलनी रोड के एक हिस्से पर एक किलोमीटर से लंबी वाहनों की लाइन लग गई। वहां तैनात एक पुलिसकर्मी के लिए जाम खुलवाने मुश्किल बन गया।

भाड़ावास में बाजरा उत्सव का आयोजन, किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों की दी जानकारी

रेवाड़ी। कृषि विभाग की ओर से शनिवार को गांव भाड़ावास में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत बाजरा उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता खंड कृषि अधिकारी डा. अजीत सिंह ने की। कार्यक्रम में 400 से अधिक किसानों ने उत्साह के साथ भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में मास्टर सुरेश ने किसानों को प्राकृतिक खेती के विषय में विस्तृत जानकारी दी तथा किसानों को इसके लाभों से अवगत कराया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र बावल से डा. नरेंद्र ने उन्नत कृषि तकनीकों एवं बाजरा उत्पादन बढ़ाने के उपाय साझा किए। मंच संचालन डा. अजीत सिंह ग्रेवाल ने किया।

एम्स भोपाल में विशेषज्ञ कंसल्टेंट पर नियुक्त हुई बव्वा की डॉ. आकांक्षा

कोसली। बव्वा गांव निवासी शिक्षक की बेटी डा. आकांक्षा यादव का चयन न्यूरोलाजी में सुपर स्पेशलाइजेशन करने के बाद एम्स भोपाल में विशेषज्ञ कंसल्टेंट के रूप में हुआ है। आकांक्षा ने 2020 में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की प्रतियोगिता परीक्षा में देशभर में 14वीं रैंक हासिल करने के बाद 2024 में एम्स भोपाल से ही डीएम न्यूरोलाजी की शिक्षा पूर्ण की है। पिता जसवंत सिंह ने बताया कि नारनौल के यदुवंशी स्कूल से 12वीं कक्षा पास

करने के बाद आकांक्षा ने एमबीबीएस में प्रवेश के लिए प्रतियोगिता परीक्षा 2008 में देशभर में ओबीसी वर्ग में 8वां स्थान प्राप्त किया था। आकांक्षा ने एमबीबीएस देश के सुप्रसिद्ध लेडी हार्डिंग मेडीकल कॉलेज नई दिल्ली से की। उसके बाद पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए नीट पीजी की प्रतियोगिता परीक्षा में देशभर में 27वां रैंक प्राप्त कर दिल्ली से ही यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंस के जीटीबी अस्पताल से 2015 में जनरल मेडिसन में एमडी की परीक्षा भी प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। डा. आकांक्षा ने लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज नई दिल्ली के एसएसके अस्पताल के आपातकालीन एवं हताहत विभाग में सीएमओ के रूप में कार्य किया। कोरोना काल में ड्यूटी के दौरान डा. आकांक्षा दो बार कोरोना पाजिटिव हुई। गत दिसंबर से वे एम्स भोपाल में विशेषज्ञ कंसल्टेंट के रूप में कार्यरत हैं। डा. आकांक्षा के पिता जसवंत सिंह सेवानिवृत्त प्राध्यापक हैं तथा माता राजबाला यादव महिला एवं बाल विकास विभाग से सेवानिवृत्त सुपरवाइजर हैं।

वैवाहिक कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण का संदेश, शगुन में लिया एक रुपया व नारियल

कोसली। कोसली में एक वैवाहिक कार्यक्रम में आए लोगों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के साथ जागरूक किया गया। शिक्षाविद एवं साहित्यकार डा. महावीर सिंह निर्दोष ने अपने बेटे डा. सौरव के लगन कार्यक्रम में मेहमानों का स्वागत एक-एक पौधा वितरित करके किया। तुम्बाहेड़ी गांव से लगन लेकर आए राजेंद्र सिंह को 11 पौधे तथा सिधरावली से भात लेकर आए मामा पक्ष के सुमित व बलराम को भी 11 पौधे भेंट किए गए। डा. निर्दोष ने बताया कि कार्यक्रम में प्लास्टिक और प्लास्टिक से बने सामान के स्थान पर गन्ने के वेस्ट से तैयार क्रोकरी का प्रयोग किया गया। उन्होंने बेटे की शादी में एक रुपया और नारियल लेकर दहेज प्रथा की रोकथाम का भी प्रयास किया। कार्यक्रम में वीर कुमार यादव, मा. हुकम सिंह, बलजीत यादव, शारदा यादव, जीवन हितेषी, दुष्यंत यादव, अशोक कुमार, निशांत, रमेश शर्मा, गुरदयाल सिंह, जवान सिंह, ढुगार्दास, धर्मवीर सिंह संजय, बलजीत, सुखलाल, रामकिशन, दयानंद भारद्वाज, अशोक, राजेंद्र, रविंद्र, धर्मेंद्र, रमेश सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

विद्यार्थियों ने विज्ञान प्रदर्शनी में दिखाएं आधुनिक मॉडल

- विद्यार्थियों की ओर से हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन भी किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

विवेकानंद पब्लिक स्कूल लाखनौर में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी में वायरलेस इलेक्ट्रिसिटी ट्रांसमिशन, इन्टीग्रिटी, रोड सेफ्टी, भूकंप अलार्म, चंद्रयान थ्री, आधुनिक पावर जनरेशन सिस्टम, आधुनिक सिंचाई तकनीक, वॉटर हार्वेस्टिंग व मैनेजमेंट, वॉटर पॉल्यूशन, वॉटर ट्रीटमेंट सिस्टम, सोलर पावर जनरेशन व हाइड्रो इलेक्ट्रिसिटी सहित अनेक आधुनिक मॉडल्स प्रदर्शित किए। विद्यार्थियों की ओर से हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन भी किया गया, जिसमें पेरेंट्स व स्कूल के विद्यार्थियों का ब्लड टैस्ट, शुगर लेवल टेस्ट, ब्लड प्रेशर, हाइट, वेट की जांच की गई। विद्यालय के निर्देशक एडवोकेट सुधीर यादव मॉडल्स की सराहना की व बच्चों को प्रोत्साहित किया। विद्यालय प्रबंधन ने विज्ञान प्रदर्शनी में के विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

जेईई मेंस परीक्षा में सफल रहे विद्यार्थी हुए सम्मानित

कोसली। गुजरवास गांव स्थित न्यू एरा पब्लिक स्कूल में जेईई मेंस परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले 9 विद्यार्थियों व प्राध्यापकों को सम्मानित किया गया। विद्यालय कोचिंग विंग के कोआर्डिनेटर डा. मिलन कुमार ने बताया कि छात्र हर्षित, वंशिका, परीशा, शौर्यन पूनिया, साहिल, नितिन कुमार, रेनू, यशु व प्रीतम ने परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए सफलता अर्जित की है। निदेशक अजय यादव ने उत्कृष्ट परिणाम के लिए विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को बधाई दी। इस अवसर पर प्राध्यापक ओपी यादव, पवन कुमार,उषा यादव, प्रियंका, कौशल्या फोगाट, सुनीति शास्त्री, आशा यादव, पीटीआई लाल सिंह, ज्योति ,निशा यादव, मोनिका ,मधु, कीर्ति जीनागल ,वंदना दायमा, सावित्री यादव, तमन्ना, हिमांशी, सुरेश कुमार व सुनील कुमारी सहित सभी अध्यापक उपस्थित थे।

श्याम मंदिर के स्थापना दिवस पर निकाली कलश यात्रा, भंडारा आज

रेवाड़ी। शनिवार को गांव खालेटा में श्याम मंदिर के स्थापना दिवस पर कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुई। मंदिर के महाराज हरिदास ने बताया कि मंदिर में सात दिवसीय श्रीमद्भगवत कथा का आयोजन किया गया। कथा के समापन पर कलश यात्रा निकाली गई। 22 फरवरी को सुबह हवन व भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कथा का वाचन हरिमोहन शास्त्री ने किया। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज के लोगों में आपसी भाईचारा कायम होता है। सभी को धर्म व जातिवाद से ऊपर उठकर असहाय लोगों की सेवा करनी चाहिए तथा अंधविश्वासों से दूर रहकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इस अवसर पर सुभाष यादव, भंवर सिंह, कैलाश यादव, बलराम, अजय, पूरनमल मुद्धिल, राधेश्याम शर्मा, रामभगत, गोविंद, विनोद, ओमकार सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

थाना प्रबंधकों ने सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

जिला पुलिस की ओर से शहर में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने व आपराधिक गतिविधियों की रोकथाम के लिए पैदल गश्त की जा रही है। शुक्रवार रात्रि बावल थाना इंस्पेक्टर संजय कुमार, मॉडल टाउन थाने से इंस्पेक्टर रतन लाल, धारूहेड़ा थाने से इंस्पेक्टर कश्मीर सिंह, खोल थाने से इंस्पेक्टर गजराज सिंह, सदर थाने से इंस्पेक्टर राजेन्द्र कुमार, कसोला थाने से इंस्पेक्टर सतीश कुमार, कोसली से इंस्पेक्टर मनोज कुमार, गढ़ी बोलनी चौकी इंजार्ज एसआई

महिपाल, कुंड चौकी से एसआई योगेश कुमार, नाहड़ चौकी से एसआई अरविन्द कुमार, सेक्टर-3 चौकी से पीएसआई राकेश कुमार व डहीना चौकी से एसआई रजनीश ने टीम के साथ अपने-अपने क्षेत्र में पैदल गश्त करके सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने स्थानीय निवासियों से बातचीत की और क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस की प्रतिबद्धता दोहराई।

संवाद किया

पुलिस टीम ने क्षेत्र के मुख्य बाजार, बस स्टैंड, धार्मिक स्थलों और भीड़भाड़ वाले इलाकों का निरीक्षण किया। उन्होंने दुकानदारों, व्यापारियों और युवाओं से संवाद किया और पुलिस व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव भी किए।

निर्माण श्रमिकों को निर्वाह भत्ता योजना से दी जा रही आर्थिक मदद

रेवाड़ी। हरियाणा सरकार की ओर से एनसीआर क्षेत्र में निर्माण गतिविधियों के बंद होने से प्रभावित पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को निर्माण कार्य बंद रहने तक हरियाणा भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड की ओर से 434 रुपये प्रतिदिन की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। डीसी अभिषेक मीणा ने जिले में प्रभावित श्रमिकों को इस योजना का लाभ उठाने के लिए अपना पंजीकरण कराने का आह्वान किया। डीसी मीणा ने बताया कि सरकार सभी श्रमिकों के लिए एक उदार और व्यापक सामाजिक सुरक्षा तंत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि निर्माण श्रमिकों के लिए निर्वाह भत्ता योजना हरियाणा सरकार द्वारा चलाई गई है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

जागरण

मनमोहक भजनों से श्याम बाबा की महिमा का गुणगान करेंगे

नई अनाजमंडी में श्री श्याम खाटू वाले का जागरण आज, पांडाल सजकर हुआ तैयार

रेवाड़ी। नई अनाजमंडी में सजाया गया जागरण का पांडाल तथा जागरण के लिए बनाया द्वार। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

नई अनाजमंडी में 22 फरवरी को श्री श्याम श्रृंगार सेवा ग्रुप की ओर से फाल्गुन महोत्सव व विशाल जागरण का आयोजन किया जा रहा है। जागरण से पूर्व शहर में खाटू श्याम के जयकारों के साथ श्याम निशान यात्रा निकाली जा चुकी है, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। श्याम बाबा के विशाल जागरण का आयोजन इस बार अनाजमंडी स्थित शिव मंदिर के सामने फड नंबर-1 पर किया जा रहा है। पहले जागरण का आयोजन किसान भवन में किया जाना था। जागरण के आयोजन को लेकर शिव मंदिर को जगमग लाइटों से सजाया गया है तथा मंदिर के सामने भव्य पांडाल तैयार किया गया है।

जागरण में श्रीधाम वृंदावन से गायक कलाकार ध्रुव शर्मा-स्वर्णा श्री, कोलकाता से राज पारीक व पंकज सोनी और गोकलगढ़ रेवाड़ी से संजय शर्मा मनमोहक भजनों से श्याम बाबा की महिमा का गुणगान करेंगे। जागरण में भंडारे का भी आयोजन किया जाएगा। जागरण शाम 3 बजे से बाबा की इच्छा तक आयोजित होगा।

इस बार शिव मंदिर के सामने किया जा रहा जागरण का आयोजन

जागरण में ये रहेंगे अतिथि

जागरण में मुख्य अतिथि के रूप में रामा देवी गोयल शिरकत करेंगी। अति विशिष्ट अतिथि पिस्ता अग्रवाल धर्मपत्नी स्व.परसराम अग्रवाल, बृजलाल गोयल कोसली वाले व एडवोकेट धीरज यादव होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में डा. पवन गुप्ता, राजेन्द्र सिंहल, रामकिशन गुप्ता भालखी वाले, विनयशील गोयल कोसली वाले, हरिओम यादव, किशन कटारिया व भगवानदास सैनी सहित अनेक गणमान्य शिरकत करेंगे। जागरण में बाबा की ज्योत आरडीएस गर्ल्स कॉलेज के प्रधान मुकेश भट्टेवाले करेंगे।

स्वस्थ मन, सशक्त तन और संतुलित जीवन ही असली स्वास्थ्यः डॉ नीरज

रेवाड़ी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की टीम की ओर से आरबीएस स्कूल रामपुरा के वार्षिक फाउंडेशन-डे के अवसर पर मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि आईएमए अध्यक्ष डा. नीरज यादव ने कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेल एवं सह-पाठयक्रम गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य केवल बीमारी का अभाव नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहने की अवस्था है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ मन, सशक्त तन और संतुलित जीवन ही असली स्वास्थ्य है।

बिजली पेंशनर्स एसो. की बैठक कल

रेवाड़ी। हरियाणा बिजली पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन यूनिट की मासिक मीटिंग 23 फरवरी को सुबह 10:30 बजे अग्रसेन अस्पताल परिसर कानोड़ गेट में आयोजित की जाएगी। एसोसिएशन के सचिव प्रभु दयाल ने बताया कि बैठक में एसोसिएशन के अहम मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 22 फरवरी 2026

कुछ साल पहले तक वर्क फ्रॉम होम के बारे में कम ही लोग जानते थे। लेकिन आज कंडीशन इससे भी एक कदम आगे बढ़कर वर्क फ्रॉम एनीवेयर तक पहुंच चुकी है। कई सर्विस सेक्टर्स ऐसे हैं, जिसमें यह वर्क मोड खूब पॉपुलर हो चुका है। इस मोड के अनेक फायदे हैं तो कुछ कमियां भी हैं। इन सबके बारे में आप जरूर जानना चाहेंगे।

कहीं से भी काम करने की आजादी

वर्क फ्रॉम एनीवेयर

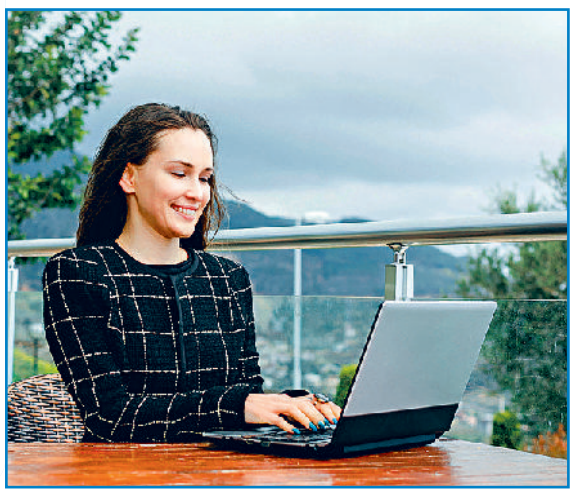

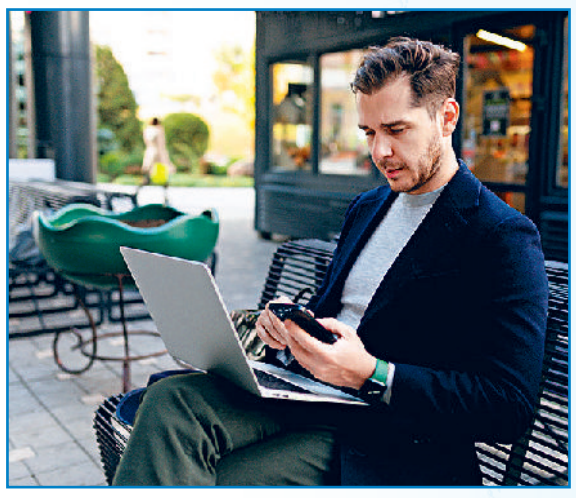

{ कवर स्टोरी / कीर्तिशेखर }

करीब पांच वर्ष पहले कोरोना महामारी ने कार्यशैली में जिस बदलाव को मजबूरी में शुरू कराया था, वह अब स्थायी जीवनशैली का विकल्प बनता जा रहा हैं। पहले सवाल था- क्या घर से काम करना संभव है? अब सवाल बदल चुका है- क्यों न कहीं से भी काम किया जाए? इसी सवाल से जन्म होता है, वर्क फ्रॉम एनीवेयर की अवधारणा का यानी, ऐसा काम जिसे करने के लिए न तो ऑफिस की दीवारें जरूरी हैं, न किसी तय शहर की सीमा, बस आपका अपना लैपटॉप हो, इंटरनेट कनेक्शन हो और थोड़ी-सी मानसिक एकाग्रता, इसके बाद कहीं पर भी आप अपना ऑफिस वर्क शुरू कर सकते हैं।

ऐसे बदलती गई कार्यशैली: वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को यह सिखाया कि जरूरी नहीं कि हर काम मीटिंग रूम या ऑफिस डेस्क पर ही बैठकर किया जाए। इस अवधारणा ने यह भी बताया कि प्रोडक्टिविटी का मतलब केवल कुर्सी पर बैठना नहीं होता। आउटपुट ज्यादा मायने रखता है। इसके बाद लोगों ने महसूस किया कि अगर घर से काम करना संभव है, तो फिर इंटरनेट की बदौलत कहीं से भी काम करना संभव है। कोरोना और उसके बाद से ही लोगों ने घूमने गए हिल स्टेशनों, समुद्र किनारे या शहर से अपने गांव जाकर घर के एक कोने में बैठकर देश-विदेश की मल्टीनेशनल कंपनियों का काम करने लगे। यहीं से वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट व्यवहार में उतरा।

इसलिए चुन रहे यह तरीका: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट पॉपुलर होने की कई वजहें हैं। महानगरों में भीड़ बहुत बढ़ती जा रही है। भारी-भरकम किराए के बाद ही किराए का मकान मिलता है, बल्कि वहां जिंदगी भी बहुत मुश्किल भरी हो जाती है। ऑफिस आने-जाने में रोज ट्रैफिक जाम से पाला पड़ता है। परिवार साथ न होने की वजह से खाने की समस्या होती है। घर और परिवार से दूर रहने के कारण हर समय मानसिक अशांति रहती है। इस तरह काम तो होता है, पर जीवन बेचैन रहता है। इसलिए युवाओं का कहना है कि अब वो जीवन के लिए काम करना चाहते हैं, काम के लिए जीवन की हायतौबा नहीं झेलना चाहते। नतीजा यह है कि नई पीढ़ी के बहुत से लोग वर्क फ्रॉम एनीवेयर का विकल्प बड़ी सहजता से चुन रहे हैं, क्योंकि यह विकल्प उन्हें भरपूर आजादी का एहसास कराता है।

इस कॉन्सेप्ट का मेन टार्गेट: वर्क फ्रॉम एनीवेयर के बारे में इस बात को समझना जरूरी है कि इसका मतलब डिजिटल घुमक्कड़ी नहीं है, न ही इसका मतलब है कि कहीं भी घूमते-फिरते रहें और जब मौका मिले या मन करे तो काम कर लें। अगर इस धारणा का मतलब यह हो जाएगा, तब तो काम करना प्राथमिकता नहीं रह जाएगी। प्रोफेशनल्स के लिए उनका वर्क बहुत मायने रखता है। ऐसे में इंटरनेट ने बौद्धिक काम करने वाले लोगों को यह सुविधा तो दी ही है कि अगर हिल स्टेशन पर घूमने जाएं, तो समय निकालकर वहां से भी अपना काम कर सकें। मां-बाप के पास गांव जाएं तो वहां भी साथ अपना काम लेकर जाएं और कहीं किसी जरूरी यात्रा पर निकल रहे हों तो भी अपना काम अपने साथ रख सकते हैं।

इन फील्ड्स में है सफल यह मॉडल: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट सर्विस सेक्टर में ही संभव है कि आप कहीं से भी अपनी विशेषज्ञता संबंधी सेवाएं अपने नियोक्ता को दे सकें। हर काम वर्क फ्रॉम एनीवेयर के ढांचे में फिट नहीं होता है। बहरहाल, जो काम इस मोड में सही से किए जा सकते हैं, वो क्षेत्र हैं- आईटी और सॉफ्टवेयर, डिजिटल मार्केटिंग, एडिटिंग, कंटेंट राइटिंग, डिजाइनिंग, ऑनलाइन टीचिंग, कस्टमर सपोर्ट-कंसल्टेंसी, एचआर असिस्टेंस और फाइनेंस एनालिसिस भी इस वर्क पैटर्न से संभव है। दूसरे शब्दों में जिन कामों में फिजिकल उपस्थिति या मशीनरी की मौजूदगी की जरूरत नहीं होती, उन क्षेत्रों में यह मॉडल तेजी से अपनाया जा रहा है।

एंप्लॉई-एंप्लॉयर दोनों खुश: कंपनियां इसलिए इस मॉडल को स्वीकार कर रही हैं, क्योंकि इससे उनको भी फायदा है। इससे उन्हें ऑफिस स्पेस पर खर्च नहीं करना पड़ता। ऑफिस चलाने के लिए जो एस्टेब्लिशमेंट खर्च होते हैं, उनसे भी बचाव हो जाता है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोगों को भर्ती करने के लिए पूरी दुनिया का दायरा मिल जाता है। कर्मचारी भी इससे संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि हर रोज घर से काम करने के लिए नहीं निकलना पड़ता और न ही यात्रा करने की जो परेशानियां और तनाव होती हैं, उनसे निपटना पड़ता है।

कंपनियां भी अब इस बात को समझ चुकी हैं कि अगर सहूलियतों के बीच कर्मचारी को काम करने का मौका मिलता है तो उसका परफॉर्मेंस बेहतर होता है। इसलिए वे ऐसे कर्मचारियों को रखना पसंद करती हैं। इससे कर्मचारियों को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि उनके रहने और दूसरी जगह पर जाकर खाने-पीने की जो भारी भरकम लागत आती है, उससे छुटकारा मिल जाता है। घर से ऑफिस तक जाने में जो समय लगता है, उससे भी मुक्ति मिल जाती है। यह बचा हुआ समय व्यक्तिगत रुचियों का आनंद लेने और आराम करने के लिए इस्तेमाल होता है। कह सकते हैं इस अवधारणा से काम कराने वाला भी खुश होता है और काम करने वाला भी खुश और दोनों को फायदा होता है।

प्रोफेशनल्स का बचता है टाइम: काम की इस अवधारणा का एक फायदा यह है कि लोग दिन में ऑफिस का काम करते हैं और फिर जो उनका दफ्तर तक जाने और आने का समय बचता है। उस समय का उपयोग बागवानी करने, संगीत सीखने, लेखन करने या अपने किसी शौक को पूरा करने के लिए लगाते हैं।

मौजूद हैं कुछ चुनौतियां: इस वर्क मोड में सबसे पहली चुनौती तो यह है कि ये काम वहीं हो सकता है, जहां इंटरनेट की सुविधा अच्छी हो, बिजली की आपूर्ति चौबीसों घंटे हो और काम करने के लिए एक सुरक्षित और एकांत जगह हो। साथ ही वहां दफ्तर जैसा माहौल बनाने की सुविधा हो। इसके अलावा सेल्फ डिसिप्लीन भी जरूरी होता है। कुछ लोग जब खुद निर्णय लेना होता है, तो कंसंट्रेट होकर काम नहीं करते। ऐसे काम करने के तरीके से कई प्रोफेशनल्स का निजी जीवन डिस्टर्ब हो जाता है। वे ऑफिस वर्क में बहुत समय देने लगते हैं। इसलिए बहुत सारे लोग शुरू-शुरू में यह फॉर्मूला अपनाते हैं, लेकिन जल्द ही ऊब कर ऑफिस आने लगते हैं। क्योंकि घर में काम करते हुए उनके वर्किंग ऑवर बहुत बढ़ जाते हैं। वर्क फ्रॉम एनीवेयर करते समय भले तनाव कम होता हो, आजादी खूब महसूस होती हो, लेकिन सामाजिक संपर्क से कट जाते हैं और अकेलेपन की आशंका से घिर जाते हैं। इसलिए कई बार कहीं से भी काम करने की सुविधा का नुकसान मानसिक रूप से बीमार होने के रूप में सामने आता है। इसलिए लोग अब हाइब्रिड मॉडल को बेहतर मान रहे हैं यानी चार दिन घर में और दो दिन दफ्तर में काम करना, सही संतुलन है। हां, महिलाओं को जरूर काम करने की इस शैली का फायदा मिलता है, क्योंकि इसके चलते उन्हें होम मेकिंग और करियर में संतुलन बनाने में मदद मिलती है। *

वर्क फ्रॉम एनीवेयर के लिए जरूरी सुविधाएं

- घर में तेज रफ्तार इंटरनेट कनेक्शन होना जरूरी है।
- घर में लैपटॉप के साथ बैकअप पावर की सुविधा होना जरूरी है।
- घर में काम करने के लिए ऑफिस जैसे स्थान का होना जरूरी है।
- रोज सुबह अनुशासित ढंग से तैयार होकर दफ्तर की तरह काम करना जरूरी है।
- घर से काम करते समय कंप्यूटर और साइबर सिक्योरिटी का ज्ञान भी जरूरी है। अगर कंप्यूटर की बेसिक समझ नहीं है तो कभी-भी अगर लैपटॉप या वर्क स्टेशन में कोई समस्या आ गई, तो तब तक काम नहीं कर पाएंगे, जब तक घर कोई मैकेनिक आकर समस्या हल न करे।
- घर से काम करने के लिए लगातार तकनीक में भी माहिर होते रहना जरूरी है।
- घर से काम करते समय लगातार उत्साह बनाए रखना भी जरूरी है ताकि अपना नियमित रूटीन सही से पूरा कर सकें।

आज के दौर में जीवन को सुविधाजनक बनाने वाला मोबाइल बेशुमार लोगों को अपना लती भी बना रहा है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए अब लोग तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

मोबाइल एडिक्शन से बचने के लिए

आजमाए जा रहे तरह-तरह के उपाय

{ टेक्नोलाइफ / लोकमित्र गौतम }

हर सुबह आंख खुलते ही मोबाइल। रात में सोते समय आखिरी नजर तक मोबाइल। दिन में बीच-बीच में सैकड़ों बार स्क्रीन चेक करना। अब ये किसी व्यक्ति विशेष की आदत नहीं बल्कि ज्यादातर लोगों की लाइफस्टाइल बन गई है। अब मोबाइल में नोटिफिकेशन देखना याद नहीं रखना पड़ता। लोगों की यह स्वतः आदत बन गई है। लेकिन इसी दौर में कुछ और भी दिलचस्प और विरोधाभासी बातें भी हो रही हैं। एक ट्रेंड बहुत तेजी से उभर रहा है और यह है मोबाइल से दूरी बनाने का। नहीं, लोग तकनीक छोड़ नहीं रहे बल्कि उसके साथ नई-नई शर्तों के तहत रिश्ता तय कर रहे हैं। कोई नोटिफिकेशन बंद कर रहा है, कोई फोन ग्रे स्केल पर डाल रहा है, कोई डंब फोन खरीद रहा है, तो कोई रविवार को मोबाइल अलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा देता है। मोबाइल को लेकर उसके पक्ष और उसके विरोध में एक से बढ़कर एक आदतें दुनिया का ध्यान खींच रही हैं।

क्यों छोड़ना चाहते हैं फोन: हाल के कुछ सालों में ऐसे कई अनुभव सामने आए हैं, जिससे पता चलता है कि मोबाइल लोगों का ध्यान बहुत जल्दी भटका देता है। यह भी महसूस किया गया है कि लगातार मोबाइल का इस्तेमाल करने से अधूरेपन का एहसास बढ़ जाता है। मोबाइल की लत लग जाए, तो कब देखते ही देखते टाइम फुर्र हो जाता है, पता ही नहीं चलता। इन सबके अलावा हाल के सालों में बिना कुछ किए लोगों को एक ऐसी थकान जकड़ रही है, जो जानकारों के मुताबिक मोबाइल की देन है। ऐसे ही और भी अनेक कारण हैं, जिसके चलते अब लोग मोबाइल से अगर पूरी तरह से नहीं, तो बीच-बीच में कुछ समय तक के लिए पिंड छुड़ाना चाहते हैं। इसलिए इन दिनों लोग मोबाइल से दूर रहने के लिए तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनमें से कुछ के बारे में बता रहे हैं।

नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म: बहुत से लोग अब सिर्फ कॉल और जरूरी एप्स के नोटिफिकेशन ही चालू रखते हैं। व्हाट्सएप ग्रुप, सोशल मीडिया लाइक और ई-मेल अलर्ट, सब कुछ लोग बंद कर रहे हैं। इस कारण फोन हाथ में लेने की अपने आप जरूरत कम रह जाती है। ऐसे उपाय अपनाने वाले लोग बताते हैं- जहां वह पहले 125 से 150 बार तक स्क्रीन अनलॉक करते थे, वहीं ऊपर बताए गए उपाय यानी नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म के बाद अब ये संख्या घटकर 40 से 50 बार रह गई है।

ग्रे स्केल मोड: इसका मतलब है फोन की रंगीन स्क्रीन को ब्लैक एंड व्हाइट में बदल देना। फोन की दुनिया काली-सफेद होते ही लोगों का रील्स में आकर्षण घट जाता है और स्क्रॉल करने का मन ही नहीं रह जाता। यह एक छोटा-सा उपाय है, लेकिन इसके बेहद असरदार मनोवैज्ञानिक नतीजे हासिल होते हैं। इसके साथ ही कुछ लोग अपने फोन में डाउनलोड किए गए हर मीडिया एप के लिए दिन में 20 से 30 मिनट की लिमिट तय कर देते हैं और लिमिट खत्म होते ही यह एप अपने आप ही लॉक हो जाते हैं, जिससे इनसे मुक्ति मिल जाती है। ये उपाय शुरू में तो झुंझुलाहट पैदा करता है, मगर 3-4 दिन के बाद इसकी आदत बन जाती है।

फोन मुक्त दिन की शुरुआत: कुछ लोग इन दिनों सुबह जगने के बाद एक से दो घंटा तक बिल्कुल मोबाइल के पास नहीं जाते, इस दौरान उनका मोबाइल स्विच ऑफ रहता है। जब तक मोबाइल स्विच ऑफ रहता है, वे फ्रेश होते हैं, चाय पीते हैं, अखबार पढ़ते हैं, एक्सरसाइज का अपना रुटीन खत्म करते हैं या ऐसा कुछ नहीं भी करते हैं तो इस दौरान सिर्फ खिड़की या बालकनी से बाहर झांकते हैं। जो लोग ये उपाय आजमा रहे हैं, उनका अनुभव बताता है कि इससे पूरा दिन शांति महसूस होती है।

सोशल मीडिया फास्टिंग: कुछ लोग सोशल मीडिया फास्टिंग का उपाय भी आजमा रहे हैं। फोन से दूर रहने का यह एक और उपाय है। इसके चलते जैसे कुछ लोग धार्मिक रूप से हफ्ते में किसी एक या दो दिन उपवास रखते हैं। लगभग उसी तरह इस प्रयोग के तहत लोग हफ्ते में एक दिन या 15 दिन में एक दिन फोन से पूरी तरह से दूर रहने का उपाय आजमाते हैं।

बेडरूम से बाहर फोन: कुछ लोग अपने फोन को बेडरूम से बाहर रखकर सोते हैं। इस तरह फोन को बेडरूम से बाहर रखने के बहुत फायदे मिलते हैं। इससे नींद बेहतर आने लगती है। रात की स्क्रॉलिंग खत्म हो जाती है। *

मानसिक स्वास्थ्य के लिए है जरूरी

लोग इस बात को भली-भांति समझने लगे हैं कि फोन के बहुत ज्यादा इस्तेमाल के कारण उनकी आंखों पर ही नहीं, ध्यान लगाने की क्षमता पर, भावनात्मक स्थिरता पर और यहां तक कि आत्मसंतोष की अनुभूति पर भी जबर्दस्त असर पड़ने लगा है। मोबाइल से दूर रहना एक तरह से खुद के पास होने जैसा है। क्योंकि जो लोग बहुत ज्यादा फोन इस्तेमाल करते हैं, उन लोगों के अनुभव बताते हैं कि वो जितना ही ज्यादा फोन में रहते हैं, उतना ही ज्यादा अकेलापन महसूस करते हैं। ऐसे में इससे दूरी बनाने की आदत मानसिक स्वास्थ्य बेहतर बनाती है।

{ गजल / हबीब कैफी }

मोहब्बत में जो लिखता है
अंधेरे में भी दिखता है

वहां कुछ फूल खिलते हैं
जहां वो पांव टिकता है

जिसे सब इश्क कहते हैं
सर-ए-बाजार बिकता है

फकत रोटी नहीं सिकती
तवे पर दिल भी सिकता है

महकता फूल लिखना था
उसी को खार लिखता है

{ व्यंग्य / महेश कुमार केशरी }

प्रभु बचाए ऐसे पड़ोसी से

करते हैं, सांप चंदन के पेड़ से हमेशा लिपटे रहते हैं। हालांकि मैं चंदन जैसा तो बिल्कुल नहीं हूं, फिर भी न जाने क्यों आस-पड़ोस के लोग मुझसे लिपटने को आतुर रहते हैं। कुछ ऐसे ही बगल के घर में रहने वाले मेरे एक पड़ोसी भी हैं। मेरे घर आ धमकने का उनको बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। उन पड़ोसी महाशय को जब-जब कोई जरूरत होती है, वे भुजंग की तरह मुझसे आकर चिपट जाते हैं। गोया कि मैं आदमी नहीं बल्कि चंदन का पेड़ होऊं। उनका मेरे घर आना-जाना ऐसे होता है, जैसे मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो। ऐसे पड़ोसी मुझे मिले हैं, जिनको दिन भर में मुझसे दसियों बार काम पड़ता है। 'भाई साहब! भाई साहब!' कह-कह कर वे मुझे चूना लगाते रहते हैं। कभी-कभी तो मुझे लगता है, जैसे मैंने इन पड़ोसी महाशय को गोद लिया हुआ है। और वे मेरे बच्चे सरीखे हैं। वाह रे भाई! मान-न-मान मैं तेरा मेहमान। कभी 'हम बाहर जा रहे हैं, जरा घर देखिएगा।' कभी 'जरा बाइक की चाबी दीजिएगा बच्चे को स्कूल छोड़ने जाना है।' तो कभी 'बाजार जा रहे हैं, जरा मेरा फलना-ढिमकाना सामान भी लेते आइएगा।' अगर कभी थोड़ी नाराजगी मैं जताता तो दांत निपोरते हुए बोलते, 'अब एक पड़ोसी ही तो दूसरे पड़ोसी के काम आता है!' किसी दिन आकर पूछते हैं, 'भाई आपके पास कैंची होगी?' तो किसी रोज कहते, 'भाई साहब आपके पास रस्सी तो होगी?' मन आता है कि कह दूं, 'जिस भी चीज की जरूरत पड़े, वो आपको मुझसे ही चाहिए होती है। भला मैं आपूर्ति मंत्रालय में काम तो नहीं करता कि हर चीज का जुगाड़ करके आपके लिए रखा होऊं। भाई मैंने आपका ठेका थोड़ी न लेकर रखा है।' अभी बीते दिनों उन्हीं पड़ोसी का खल चोरी हो गया। वे मुझ पर झल्लाने लगे, 'आप के भरोसे घर छोड़कर गया था, देखिए मेरा खल चोरी हो गया।' मन में आया उसी खल में उन्हें कूट दूं। कह दूं कि आपने मुझे अपना खरीदा हुआ नौकर समझ लिया है क्या, जो मैं आपकी चाकरी करूंगा।

मेरे घर आ धमकने का पड़ोसी महोदय को बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। गोया मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो।

पता नहीं कब मेरा पिंड छूटेगा इन महाशय से! भगवान बचाए ऐसे पड़ोसी से। *

{ लघुकथा / डॉ. रंजना जायसवाल }

डुबकी

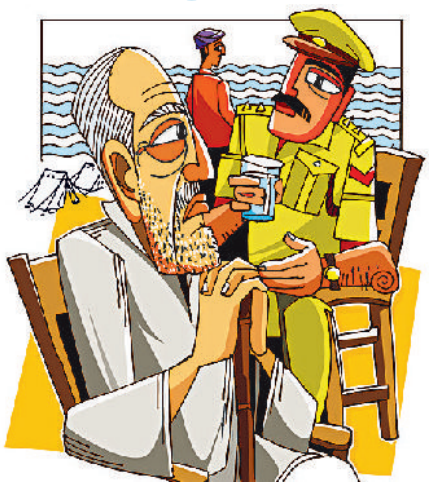

खोया-पाया कैंप में उस बूढ़े बाबा को बैठे छह घंटे हो गए थे। रात गहराती जा रही थी। अभी तक उन्हें कोई ढूंढने भी नहीं आया था। बाबा की आंखें एक आशा के साथ हर आहट के साथ दरवाजे तक जातीं, लेकिन वह निराश होते। कैंप के कर्मचारी की ड्यूटी बदलने का समय हो गया था। नए कर्मचारी ने पानी का गिलास पकड़ाते हुए बाबा से पूछा, 'आप कहां से आए हैं?'

'बेटा काफी दूर से आए हैं।'

'कुछ नाम तो होगा।'

'नाम...' बाबा ने याद करने की कोशिश की।

'किसके साथ आए हैं?'

'कलुवा, हमारा इकलौता बेटा'

'कुंभ नहाए आए थे?'

'हमार बेटवा ब्याह के दस बरस के बाद पैदा हुआ था। उसकी अम्मा मन्नत की रही, गंगा मैया को साड़ी चढ़ाएगी पर परमात्मा को कुछ और ही मंजूर था। अब जइबे तब जइबे करते-करते बख्त निकल गया। उसकी अम्मा ने मरते बख्त कसम ली थी। बचुवा के साथ मन्नत उतारे आए रहे। कुंभ नहाए लेब और मन्नत भी उतार देब।'

'बेटा कहां है बाबा?'

'हमसे बोला कुछ खाए का सामान लेने जाए रहे। इहां बैठे रहो हम अबही आत है।'

'फिर?'

'हमको बैठाकर पता नहीं कहां चला गवा? पुलिस वाले हमको इहां पहुंचा गए। बेचारा कितना परेशान हो रहा होगा।' बाबा की आंखों में अपने बेटे कलुवा के लिए चिंता उभर आई। कर्मचारी समझ चुका था, बीते कुछ दिनों में बाबा जैसे न जाने कितने लोग अपनों की तलाश और इंतजार में भटक रहे थे। 'बाबा, दस बार माइक पर कलुवा का नाम पुकारा जा चुका है। फोन नंबर याद है उसका?'

'फोन?'

'वापसी कब थी?'

'छः बजे की टरेन थी।'

'पर बाबा अब तो नौ बज रहे हैं।'

'नौ!' बाबा की आंखों के जुगनू धप्प पड़ गए।

'कलुवा आता ही होगा। हमें लिए बिना कैसे जाएगा?'

बाबा ने धीरे से बुदबुदाया। सामने गंगा मैया मंद-मंथर गति से बह रही थी। वह एक और पाप की साक्षी थी। जिसे कोई डुबकी धुल नहीं सकती थी। *

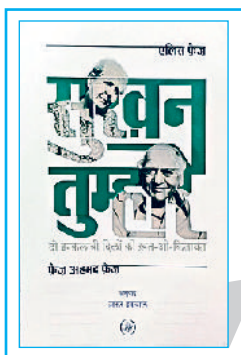

पुस्तक: सुखन तुम्हारे, लेखक: फैज अहमद फैज-एलिस फैज, अनुवाद: जफर इकबाल, मूल्य: 550 रुपए, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

दो दिलों की खत-ओ-किताबत

गजलों-नज्मों का शायद ही कोई ऐसा कद्रदान होगा, जो फैज अहमद फैज के नाम से नावाकिफ हो। अपनी शायरी में इंकलाबी तेवर और हुकूमत की बंदिशों को चुनौती देने वाले फैज के भीतर एक नाजुक दिल पति और बेहद जज्बाती पिता भी मौजूद था, इसकी बानगी उनके द्वारा लिखे उन खतों में दिखती है, जिनको उन्होंने कैद के दौरान अपनी पत्नी और बच्चों को लिखे थे। हाल में छपकर आई किताब 'सुखन तुम्हारे' में फैज के द्वारा लिखे गए 135 खत और उनकी पत्नी एलिस के द्वारा लिखे गए 178 खतों को संकलित किया गया है। वर्ष 1951 में पाक सरकार द्वारा गैर कानूनी तौर पर गिरफ्तार किए गए फैज, करीब चार वर्ष तक जेल में रहे। इस दौरान फैज और एलिस के बीच हुई खत-ओ-किताबत का महत्व किसी ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है। यहां गौर करने वाली बात है कि फैज की गिरफ्तारी ने उन्हें बेबस नहीं और मजबूत बना दिया था। 17 जुलाई 1952 को लिखे खत में वह कहते हैं, 'यह जख्म बहुत अचानक, बहुत बेसबब लगा है लेकिन इसे सहने का बल मुझमें है। और इसके सामने भी मेरा सिर नहीं झुकेगा।' 24 अगस्त 1954 को एलिस, फैज को लिखे खत में भीगे जज्बातों से उनकी गैरमौजूदगी को महसूस करती हैं, 'जब मीजू ने केक काटा, उसने अपना मुंह बना लिया। आंखें बंद कीं और उस चीज की दुआ मांगी, जिसके लिए हम सब मांग रहे थे- खुदा तुम्हें हमारे पास घर भेज दें।' कह सकते हैं इस किताब में एक इंकलाबी शायर और उनकी पत्नी के व्यक्तित्व का बिल्कुल नया पहलू हमारे सामने उजागर होता है। *

मध्य प्रदेश का प्राणपुर गांव

तमिलनाडु स्थित औरोविले गांव

वैसे तो पर्यटन के लिहाज से अपने भारत देश में अलग-अलग तरह के बेशुमार स्थल मौजूद हैं। लेकिन अगर आप बिल्कुल अनोखे और सुकून भरे पर्यटन स्थल घूमना चाहते हैं तो आपको कुछ विशिष्ट पर्यटन गांवों का रुख करना चाहिए। यहां बता रहे हैं देश के कुछ ऐसे खूबसूरत गांवों के बारे में, जो आपके लिए परफेक्ट ग्राम्य-पर्यटन स्थल हो सकते हैं।

गांवों में मिलेगी सुकून की छांव

टूरिस्ट प्लेसेस / समीर चौधरी

आमतौर पर माना जाता है कि गांवों में सुविधाओं की कमी होती है। इसीलिए शहर के लोग वहां जाना पसंद नहीं करते हैं। लेकिन आपको जानकर अच्छा लगेगा कि कुछ प्रदेशों के चुने हुए गांवों को विशिष्ट पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जहां आप आधुनिकता और शहरी शोर-शराबे से दूर शांत, स्वच्छ और सुकून भरा अनुभव पा सकते हैं। लद्दाख की पहाड़ियों और छत्तीसगढ़ के जंगलों से लेकर, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश तक में कई ऐसे गांव हैं, जो विरासत और प्रकृति को सुरक्षित रखे हुए हैं। अपनी इसी विशेषता के कारण यह उन पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं, जिनकी ग्रामीण जीवनशैली, संस्कृति व इतिहास में दिलचस्पी होती है। ऐसे ही कुछ गांवों के बारे में जानिए।

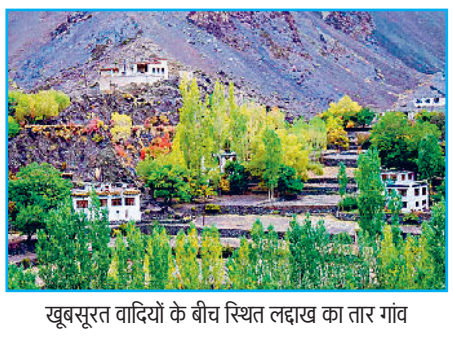
खूबसूरत वादियों के बीच स्थित लद्दाख का तार गांव

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में स्थित धुडमारास गांव

सावरवानी-लाड़पुरा खास-प्राणपुर, मध्य प्रदेश: मध्य प्रदेश के ये तीन गांव आपको ग्रामीण भारत की सुंदर छवियों से रूबरू कराते हैं। प्राणपुर, सावरवानी व लाड़पुरा खास गांवों को वर्ष 2024 में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। सावरवानी, आपको गोंड आदिवासी जीवन का अनुभव कराता है। यहां आरामदायक होमस्टे और सुंदर फार्मलैंड्स हैं। लाड़पुरा आपको विश्वसनीय बुंदेली एहसास से आकर्षित करता है। यहां के परंपरागत घर व हाथ से पेंट की गईं खूबसूरत दीवारें पर्यटकों को मोहित करती हैं। प्राणपुर, भारत का पहला क्राफ्ट हैंडलूम पर्यटन गांव है, जहां लगभग 900 बुनकर हैं, जो चंदेरी कपड़ा बुनने की कला में माहिर हैं। इन गांवों में आप क्राफ्ट वर्कशॉप्स, फॉरेस्ट वॉक, साइकिलिंग ट्रेल्स और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव कर सकते हैं।

उत्तर प्रदेश का कारिकोट गांव

ग्वालियर एयरपोर्ट से प्राणपुर 240 किमी. और लाड़पुरा खास 123 किमी. की दूरी पर है, जबकि जबलपुर से सावरवानी की दूरी 220 किमी. है।

तार गांव, लद्दाख: लद्दाख क्षेत्र में इस गांव को पहला सीसीए (कम्युनिटी-डिक्लेयर्ड कंजरवेशन एरिया) घोषित किया गया। लद्दाख का यह खूबसूरत गांव भी पर्यटन मंत्रालय की भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव की 2024 की सूची में शामिल हो चुका है। इसके संरक्षित क्षेत्र का प्रबंधन स्थानीय समितियां करती हैं, जोकि अपने प्राकृतिक संसाधनों, संस्कृति व परंपराओं को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी निभाती हैं। इनके पास समुदाय की निगरानी वाला पर्यटन, शून्य-प्लास्टिक अभियान और लद्दाखी सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण का भी दायित्व है। यहां आप ऊंचाई पर ट्रैकिंग, प्राचीन मठों को देख सकते हैं और ईको-होमस्टे में ठहर सकते हैं। यहां आने के लिए निकटतम एयरपोर्ट लेह है, जहां से तार लगभग 85 किमी. के फासले पर है।

कारिकोट गांव, उत्तर प्रदेश: उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में स्थित कारिकोट गांव को इंडियन सब-कॉन्टिनेंट रेस्पॉन्सिबल टूरिज्म अवार्ड 2025 (पीस, अंडरस्टैंडिंग एंड इन्क्लूसिविटी) से सम्मानित किया जा चुका है। स्थानीय थारू आदिवासी समुदाय के प्रयासों से इस गांव में होमस्टे, क्रॉस-बॉर्डर ईको-टूरिज्म व सांस्कृतिक अनुभव को प्रोत्साहित करने के साथ ही देशज क्राफ्ट, खान-पान व लोककला को पुनर्जीवित किया गया है, जिससे यह गांव थारू विरासत का लाइव म्यूजियम बन गया है। आप यहां खासतौर से विलेज वॉक, स्थानीय खान-पान, हस्तकला ट्रेल, झील के किनारे पक्षियों को देखने के साथ ही स्थानीय कहानी सुनाने के आयोजनों का अनुभव कर सकते हैं। इससे निकटतम एयरपोर्ट लखनऊ है, जहां से यह गांव लगभग 200 किमी. दूर है।

औरोविले गांव, तमिलनाडु-पुडुचेरी: औरोविले गांव वैसे तो तमिलनाडु में है, लेकिन इसका कुछ हिस्सा पुडुचेरी में भी है। यह भारत में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय टाउनशिप है, जिसे यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसकी भूमि एक जमाने में कटाव के कारण बेकार हो गई थी, लेकिन अब दशकों के वनीकरण, ईको-आर्किटेक्चर और वेस्ट-फ्री सिस्टम से फिर हरी-भरी हो गई है। यहां पर आप मैत्री मंदिर देख सकते हैं। इसके अलावा सस्टेनेबल-लिविंग वर्कशॉप, पॉटरी, वीविंग और योग सत्र में हिस्सा लेने के साथ ही 3,000 एकड़ में फिर से लगाए गए वन में साइकिलिंग का रोमांचक अनुभव ले सकते हैं। औरोविले गांव चेन्नै एयरपोर्ट से लगभग 140 किमी. और पुडुचेरी से तकरीबन 11 किमी. की दूरी पर स्थित है।

धुडमारास गांव, छत्तीसगढ़: छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में धुर्वा कबीले द्वारा संचालित यह पर्यटन गांव ईको-फ्रेंडली अनुभव प्रदान करता है, जैसे- बैंबू राफ्टिंग, कयाकिंग और ट्रैकिंग। यहां सोलर-पॉवर इंफ्रास्ट्रक्चर है। वन संरक्षण प्रयासों के कारण परंपरागत जल स्त्रोतों को दुरुस्त किया गया है और स्थानीय तौर पर निर्मित होम स्टे भी हैं। इस गांव में आदिवासी संस्कृति, परंपरागत शिल्प व साल वन ट्रेल्स का आनंद लेने के साथ ही लोक संगीत और स्थानीय खेतों से मेज तक जायकेदार भोजन का अनुभव ले सकते हैं। सतत पर्यटन विकास के लिए धुडमारास गांव का चयन यूएनडब्लूटीओ बेस्ट टूरिज्म विलेज अपग्रेड प्रोग्राम 2024 में किया गया था। यहां से निकटतम एयरपोर्ट जगदलपुर है, जहां से यह गांव लगभग 35 किमी. के फासले पर है। *

भय को जब करेंगे पराजित तब मिलेगी मनचाही सफलता

कई बार हमारे भीतर कुछ ऐसे डर समा जाते हैं, जो सफलता और खुशहाल जीवन की राह में बड़ी रुकावट बन जाते हैं। कौन से हैं ये डर और इनसे कैसे निपटा जाए, मनचाही सफलता पाने के लिए आपको जरूर जानना चाहिए।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

डर सफलता की राह में सबसे बड़ी अड़चन होती है। 'जो डर गया समझो मर गया', 'डर के आगे जीत है।' ये कुछ पॉपुलर कोटेशंस या फिल्मी डायलॉग हैं, जिन्हें आपने कहीं न कहीं पढ़ा या सुना होगा। सवाल है कि आखिर ये कौन से डर हैं, जिनसे उबरना जरूरी है और इनसे कैसे उबरें, ताकि आप सफल, समृद्ध जीवन की ओर बढ़ सकें।

पैसे न होने का डर: अमीर हो या मध्य वर्ग के लोग, पैसों की कमी होने से सब डरते हैं। मध्य और निम्न वर्ग को और ज्यादा गरीब होने का डर सताता है। पैसे की कमी का डर व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, जोखिम लेने की क्षमता और हिम्मत को खत्म कर देता है। सबसे पहले निर्णय की शक्ति का उपयोग करके इस डर को दूर करें। अपनी चेतना को हमेशा धन की कमी से हटाकर धन की अधिकता पर केंद्रित करें। धन कमाने के तरीकों के बारे में सोचें, न कि गरीबी के परिणामों के बारे में। अपनी आय बढ़ाने का एक स्पष्ट और लिखित लक्ष्य और योजना बनाएं। जब आपके पास काम करने की एक ठोस योजना होती है, तो डर की जगह आत्मविश्वास ले लेता है। हमेशा यह सोचें कि आपकी आंतरिक खुशी भौतिक संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही पूरी मेहनत से धन कमाने के अपने प्रयास जारी रखें।

आलोचना का डर: यह डर अकसर लोगों को नए विचार आजमाने, जोखिम लेने या अपने सपनों का पीछा करने से रोकता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि दूसरे लोग क्या सोचेंगे या कहेंगे? इस डर को दूर करने का आसान तरीका यही है कि दूसरों की राय की परवाह न करें। लोग अकसर आपकी आलोचना इसलिए करते हैं, क्योंकि या तो वे खुद डरे हुए होते हैं या फिर आपसे ईर्ष्या करते हैं। अपने कार्यों और निर्णयों के लिए खुद को जवाबदेह बनाएं। आत्म-अनुशासन आपको बाहरी आलोचनाओं से प्रभावित हुए बिना अपने लक्ष्य पर टिके रहने में मदद करता है। आलोचना का डर आपकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति को खत्म कर देता है। इसलिए खुद को रचनात्मक कार्यों में लगाएं।

बीमारी-मृत्यु का डर: यह डर अकसर किसी क्रॉनिक बीमारी या नियमित शारीरिक दर्द से उत्पन्न होता है। कई बार किसी नजदीकी की बीमारी देखकर भी ऐसा होता है। यह डर अकसर मानसिक तनाव पैदा करता है। इसे दूर करने के लिए बीमारी के बारे में लगातार सोचना या बात करना बंद करें। अपने मन को सकारात्मक और स्वस्थ विचारों से भरें। स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाएं। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त आराम पर ध्यान केंद्रित करें। अपनी दिमागी शक्ति का उपयोग करें। यह विश्वास करें कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर का निर्माण करता है। अपनी मानसिक ऊर्जा को ठीक होने या स्वस्थ रहने में लगाएं, न कि बीमार पड़ने के डर में।

रिश्ते खोने का डर: यह डर किसी प्रियजन, जीवनसाथी या परिवार के सदस्य से बिछड़ने या उन्हें खोने के भय से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए आत्म-प्रेम और आत्मविश्वास बढ़ाएं। जब आप खुद से प्यार करते हैं और खुद पर भरोसा करते हैं, तो आप दूसरों पर भावनात्मक निर्भरता कम कर देते हैं। ईर्ष्या इस डर का सबसे बड़ा संकेत है। तर्कसंगत रूप से अपनी असुरक्षाओं को पहचानें और उन्हें तर्क से दूर करें। यह समझें कि आप किसी को नियंत्रित नहीं कर सकते। रिश्ते विश्वास और आपसी सम्मान पर टिके होते हैं, डर पर नहीं।

बुढ़ापे का डर: यह डर अकसर उम्र बढ़ने के साथ आने वाली शारीरिक कमजोरी, शारीरिक आकर्षण में कमी, आर्थिक अभाव और मृत्यु की संभावना से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए बुढ़ापे को अनुभव और ज्ञान के रूप में देखें। उम्र बढ़ने को कमजोरी के रूप में नहीं, बुद्धिमत्ता के संचय के रूप में स्वीकार करें। शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय रहकर इस डर का मुकाबला करें। नए कौशल सीखें और जीवन में उत्साह बनाए रखें। अपनी आर्थिक सुरक्षा शुरू से ही सुनिश्चित करें। वित्तीय योजना बनाकर बुढ़ापे में संभावित गरीबी के डर को कम करें।

इनमें से कोई डर हो या कोई अन्य प्रकार का डर, सभी डरों को दूर करने का मूल मंत्र 'इच्छाशक्ति' और 'सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण' है। इन दो मूल मंत्रों को अपनाकर आप भयमुक्त खुशहाल जीवन जी सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम और महानतम नदियों- गंगा, नर्मदा की तरह ही ताप्ती नदी का भी भारतीय संस्कृति, भूगोल एवं अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। ताप्ती नदी से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में बता रहे हैं, जिनसे आप इस नदी की महत्ता को और भी अच्छे से जान-समझ पाएंगे।

गंगा-नर्मदा जैसी महत्वपूर्ण पश्चिमवाहिनी ताप्ती नदी

नदी गाथा / वीना गौतम

ताप्ती जिसे तापी नदी भी कहते हैं, भारत की उन चुनिंदा बड़ी पश्चिम वाहिनी नदियों में से है, जो मध्य भारत से निकलकर अरब सागर में गिरती है। यह विशेषता इसे गंगा जैसी विशाल पूर्व वाहिनी नदी और नर्मदा जैसी महान पश्चिम वाहिनी नदी के समकक्ष बनाती है। भौगोलिक, आर्थिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक स्तरों पर इस नदी की भूमिका अत्यंत व्यापक है।

उद्गम-प्रवाह: ताप्ती नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के बेतूल जिले के पास सतपुड़ा पर्वतमाला में है। यहां से लगभग 724 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए महाराष्ट्र और गुजरात से गुजरती यह नदी अंततः अरब सागर में जा मिलती है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। इस नदी की सहायक नदियां इसकी जलराशि को संपन्नता प्रदान करती हैं। ताप्ती की सहायक नदियों में पूर्णा, गिर्णा, वाघुर और अंजली जैसी नदियां शामिल हैं। ताप्ती को गंगा और नर्मदा के समकक्ष महत्वपूर्ण नदी इसलिए माना जाता है, क्योंकि यह भी इन्हीं की तरह विशाल नदी घाटी प्रणाली बनाती है। ताप्ती नदी का जलभरण क्षेत्र लगभग 65 हजार वर्ग किलोमीटर है।

ताप्ती नदी के तट पर स्थित मंदिर

जहां तक इसके बहाव की गति की बात है, तो शुष्क मौसम में इसका बहाव 0.3 से 0.6 मीटर प्रतिसेकेंड होता है, जबकि मानसून के दौरान ताप्ती नदी का बहाव 1.5 से 3 मीटर प्रति सेकेंड तक पहुंच जाता है। ताप्ती का औसत वार्षिक प्रवाह 17 से 18 बिलियन घन मीटर आंका गया है। इसका अधिकांश भाग जून से सितंबर यानी मानसून के दौरान प्राप्त होता है। ताप्ती नदी की वर्षा पर निर्भरता करीब 75 फीसदी है और शेष 25 फीसदी जलराशि इसके भूजल, पुनर्भरण और सहायक नदियों के जरिए प्राप्त होता है।

संस्कृति की वाहक: जिस तरह गंगा नदी-घाटी में प्राचीन सभ्यताएं विकसित हुईं, वैसे ही ताप्ती घाटी में भी आदिवासी समाज, कृषि संस्कृतियां और व्यापारिक नगर विकसित हुए। गंगा और नर्मदा की तरह ताप्ती को भी अनेक स्थानों में पवित्र नदी का दर्जा प्राप्त है और इसके किनारे मेले और पवित्र स्नानों से संबंधित पर्व आयोजित किए जाते हैं। देश की दूसरी पवित्र नदियों की तरह ताप्ती के तट पर भी अनेक महत्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं।

अर्थव्यवस्था में योगदान: चूंकि ताप्ती पश्चिम वाहिनी नदी है, इसलिए इसमें ढाल अपेक्षाकृत ज्यादा है। यही कारण है कि इसका प्रवाह पूर्वगामी नदियों के मुकाबले ज्यादा है, जिससे जल विद्युत उत्पादन के लिए ताप्ती महत्वपूर्ण नदी मानी जाती है। इसके पानी का उपयोग सिंचाई के लिए, पेयजल के रूप में, औद्योगिक उपयोग हेतु तथा विद्युत उत्पादन आदि में किया जाता है। ताप्ती नदी की मिट्टी जलोढ़ है, जो अत्यंत उपजाऊ होती है। इस कारण इसके परिक्षेत्र में दोहरी फसल प्रणाली सहजता से संभव है और किसान अपेक्षाकृत कम सिंचाई लागत में खेती कर पाते हैं। ताप्ती बेसिन एक स्वतंत्र और बड़ा जलग्रहण क्षेत्र है, जो लाखों लोगों की कृषि, पेयजल और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। यह गुण ही इसे पश्चिम की नर्मदा और पूर्व की गंगा जैसी नदियों के समकक्ष बनाती है। ताप्ती घाटी कपास, सोयाबीन, गन्ना, केला और विभिन्न तरह की दालों की खेती के लिए जानी जाती है। गंगा की तरह ताप्ती नदी भी कृषि आधारित जीवनरेखा की भूमिका निभाती है। ताप्ती नदी कृषि एवं ग्रामीण रोजगार का भी बड़ा आधार बनाती है।

ताप्ती नदी के किनारे स्थित शहर विशेष रूप से कपड़ा, रसायन, हीरा कटाई और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे लाखों रोजगार और शहरी विकास को बल मिलता है। इसी नदी के किनारे सूरत जैसा औद्योगिक और व्यापारिक शहर स्थित है।

समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र: ताप्ती नदी में मीठे पानी की अनेक महत्वपूर्ण प्रजातियों की मछलियां पाई जाती हैं, जिनमें रोहू, कतला और मृगल शामिल हैं। सतपुड़ा क्षेत्र से गुजरते समय यह नदी कई वन क्षेत्रों को सिंचित करती है, जिससे वन क्षेत्रों का पारिस्थितिकी तंत्र गतिशील रहता है। ताप्ती नदी के डेल्टा क्षेत्र में पक्षियों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं और प्रवासी पक्षियों का भी यह आश्रय स्थल बनती है। ताप्ती बेसिन में नदी का पानी आस-पास के जलस्रोतों को भरता है, जिससे कुओं, नलकूपों आदि में पूरे साल जल उपलब्ध रहता है।

मौजूद हैं कई संकट: देश की अन्य बड़ी नदियों की तरह ताप्ती भी कई तरह की औद्योगिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है। यह भी औद्योगिक प्रदूषण से ग्रस्त है। इस नदी में भी बड़े पैमाने पर शहरी अपशिष्ट आकर मिलता है तथा इसके आस-पास में भी अवैध रेत खनन आदि की घटनाएं होती रहती हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि हाल के कुछ सालों में जलवायु परिवर्तन और वर्षा की अनिश्चितता की भी यह नदी शिकार हुई है। यही नहीं इस सबके चलते ताप्ती नदी की गुणवत्ता और जैव विविधता दोनों प्रभावित हुई है। ताप्ती नदी पर मंडरा रहे इन संकटों के मद्देनजर इसके संरक्षण के लिए कई कदम उठाए गए हैं। जैसे अपशिष्ट जलशोधन संयंत्र, नदी किनारे हरित पट्टी का विकास, सामुदायिक जागरुकता और सतत जल प्रबंधन। *

पिछले महीने से सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर एक नया शो शुरू हुआ है- 'व्हील ऑफ फॉर्चून', जिसे होस्ट कर रहे हैं अक्षय कुमार। इस शो को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इस सो, अपकमिंग फिल्मों के साथ-साथ अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े सवालों पर अक्षय कुमार ने खुलकर जवाब दिए हैं इस खास मुलाकात में।

जो आपकी तकदीर में है वह जरूर आपके पास आएगा: अक्षय कुमार

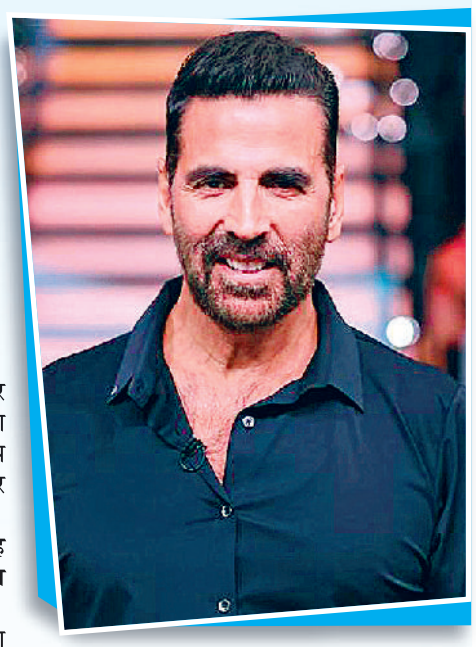

खास मुलाकात / आरती सक्सेना

हाल में ही अक्षय कुमार टीवी और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक ऐसा रियालिटी शो लेकर आए हैं, जो पहले से ही 60 देशों में पॉपुलर हो चुका है। यह अमेरिका का नंबर वन रियालिटी शो है। इस शो का नाम 'व्हील ऑफ फॉर्चून' है। गेम का पूरा फॉर्मेट अक्षय कुमार खुद बतौर होस्ट इस शो की शुरुआत में समझाते हैं, साथ ही मजाकिया अंदाज में सबको हंसाते नजर आते हैं। इस शो के अलावा अक्षय की फिल्म 'हैवान' रिलीज होने वाली है, जबकि एक और फिल्म 'भूत बंगला' अप्रैल में रिलीज होगी। दोनों ही फिल्मों को प्रियदर्शन ने डायरेक्ट किया है। अक्षय का अपने इस शो और आने वाली फिल्मों को लेकर क्या कहना है? और भी पर्सनल सवालों के जवाब अक्षय कुमार ने एक मुलाकात में बेबाक अंदाज में दिए। पेश है अक्षय कुमार से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आप इन दिनों सोनी एंटरटेनमेंट चैनल पर टेलिकास्ट हो रहे गेम शो 'व्हील ऑफ फॉर्चून' को होस्ट कर रहे हैं। इस गेम शो को होस्ट करने के पीछे खास वजह क्या है?

मुझे यह शो बहुत ही दिलचस्प लगा, क्योंकि इसमें पार्टिसिपेंट्स को ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने का मौका मिलता है। बहुत ज्यादा दिमाग नहीं लगाना है। अगर तकदीर ने साथ दिया तो कंटेस्टेंट्स, कुछ मिनटों में लाखों रुपए और कई अच्छे और महंगे गिफ्ट जीत सकते हैं। इस शो का फॉर्मेट सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पॉपुलर है। पर्सनली मुझे भी इस शो में कई सारी खूबियां नजर आईं, इसलिए मैंने बतौर होस्ट यह शो करना स्वीकार किया।

अमिताभ बच्चन ने टीवी पर 'कौन बनेगा करोड़पति' और सलमान खान ने 'बिग बॉस' जैसे सुपरहिट शो के कई सीजंस सफलतापूर्वक होस्ट किए हैं। ऐसे में क्या आपको इन दोनों कलाकारों से कंपैरिजन का भी प्रेशर है?

नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं इस मामले में बहुत पॉजिटिव हूं। मुझे कुछ करना है तो मैं करता हूं, नेगेटिव बातें सोच कर अपने आप को कमजोर नहीं बनाता। मुझे 'व्हील ऑफ फॉर्चून' का कॉन्सेप्ट दिलचस्प लगा तो मैंने शो होस्ट करना मंजूर कर लिया। जहां तक अमित जी और सलमान का सवाल है तो अमित जी मेरे लिए फादर फिगर हैं, सलमान मेरा अच्छा दोस्त है। दोनों ही लोग अपना काम बहुत अच्छे से कर रहे हैं। मेरा उनके साथ कोई कॉम्पिटिशन नहीं है। मैं इस शो को एंज्वॉय कर रहा हूं।

अगर 'व्हील ऑफ फॉर्चून' में आप होस्ट की जगह पार्टिसिपेंट होते तो आप दिमाग से खेलते या नसीब के भरोसे गेम को आगे बढ़ाते?

यह शो दिमाग से ज्यादा तकदीर के साथ खेला जा सकता है। शो में दिमाग सिर्फ इतना ही लड़ा सकते हैं कि गेम के दौरान पूछे गए सवालों का जवाब सोच-समझ कर दें, बाकी जब व्हील घूमता है तो जीरो पर भी रुक सकता है और एक करोड़ पर भी। मैंने इस शो में कई लोगों को लाखों रुपए जीतते हुए देखा है। सो अगर मैं कंटेस्टेंट होता तो मुझे भी सही जवाब देना पड़ता, बाकी किस्मत कितना साथ देती है, वह तो अपने हाथ में नहीं होता है।

'व्हील ऑफ फॉर्चून' में अक्षय कुमार का निराला अंदाज

अपने इस शो में क्या आप किसी खास बॉलीवुड एक्टर को बुलाना चाहेंगे?

अगर बॉलीवुड एक्टर को अपने शो में बुलाने की बात करें तो मैं सलमान, शाहरुख, विद्या बालन, सुनील शेट्टी, संजय दत्त इन सभी को अपने शो में बुलाना चाहूंगा।

आप तकदीर पर ज्यादा विश्वास करते हैं या मेहनत पर?

मेरा मानना है अगर आपकी तकदीर में कुछ नहीं है तो आप लाख कोशिश कर लो वह नहीं मिलेगा और अगर तकदीर में कुछ है तो आप वो पा ही लेंगे। मैं जब छोटा था तो अपने पापा के कंधों पर चढ़कर राजेश खन्ना साहब की शूटिंग और उनका बंगला देखने जाया करता था, मुझे क्या पता था कि एक दिन मेरी उनकी बेटी से ही शादी हो जाएगी। इसलिए मेरा मानना है कि जिंदगी में कुछ भी असंभव नहीं है। जो आपकी तकदीर में लिखा है, वह जरूर आपके पास आएगा।

बीते कुछ समय में आपकी कई फिल्में असफल रहीं। क्या फ्लॉप फिल्मों ने आपको निराश किया?

फ्लॉप फिल्में कुछ समय के लिए दुःखी जरूर कर देती हैं, लेकिन जिंदगी में कभी मैं निराश नहीं होता हूं। करियर की शुरुआत में मैंने 12 से 15 फिल्में एक साथ फ्लॉप दी थीं। लेकिन बाद में तकदीर ने पलटा खाया और मेरी कई फिल्में हिट हो गईं, जैसे 'खिलाड़ी', 'मोहरा', 'मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी' एक्सेक्ट्रा। मेरा मकसद अपने किरदार के साथ पूरा न्याय करना है। फिर फिल्म फ्लॉप होती है या हिट, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

आने वाली फिल्म 'हैवान' में आप नेगेटिव रोल कर रहे हैं, क्या यह आपकी हीरो वाली इमेज को नुकसान पहुंचा सकता है?

मेरे ख्याल में ऐसा होगा नहीं, क्योंकि दर्शक भी अपने हीरो को हर तरह के किरदार में देखना चाहते हैं। 'हैवान' में मैं एक बार फिर नेगेटिव रोल कर रहा हूं। मुझे ऐसा लगता है कि दर्शक मुझे इस फिल्म के किरदार में भी बतौर एक्टर खूब पसंद करेंगे। *

पैसों से ज्यादा महत्वपूर्ण प्यार और रिश्ते

अक्षय कुमार के लिए लाइफ में पैसा ज्यादा महत्वपूर्ण है या प्यार, पूछने पर उनका जवाब होता है, 'मेरी नजर में लाइफ में पैसों से ज्यादा प्यार और रिश्तों की अहमियत है। मुझे अपनी बेटी के साथ वक्त बिताना बहुत अच्छा लगता है। खाली वक्त में मैं घर पर अपने परिवार के लिए खाना भी बनाता हूं। अगर आपके अपने आप के साथ हैं तो आप मेहनत करके पैसा कमा सकते हैं, लेकिन पैसों से आप रिश्ते या प्यार नहीं खरीद सकते हैं।'